

हिंदी व्याकरण

5

लेखक :
आलोक शर्मा
(एम०ए०, बी०एड०)





नाम _____	<input type="checkbox"/>
कक्षा _____ सैक्शन _____	
स्कूल _____	
घर का पता _____	
दूरभाष : स्कूल _____	
दूरभाष : घर _____	

हिंदी

व्याकरण



प्रस्तावना

हिंदी व्याकरण की यह शृंखला आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इसे एन. सी. ई. आर. टी., इंटरस्टेट बोर्ड फॉर एंग्लो इंडियन एजुकेशन एवं अन्य प्रांतीय शिक्षा परिषदों द्वारा स्वीकृत नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार किया गया है।

इस शृंखला का उद्देश्य भाषा और व्याकरण का समुचित और सुबोध शैली में अध्ययन कराना है। छात्र व्याकरण को एक कठिन विषय के रूप में देखते हैं। इसलिए व्याकरण के जटिल नियमों को अत्यंत सरल और रोचक शब्दों में छात्रों तक पहुँचाना ही मेरा प्रयास है।

मेरा यह प्रयास छात्रों को अधिक रटने से बचाते हुए ज्ञानवर्धन करने के लिए है। अनेक चित्रों की सहायता से व्याकरण को समझाने का प्रयत्न किया गया है। अभ्यास में यथास्थान बहुवैकल्पिक प्रश्नों (MCQs) का समावेश किया गया है।

आशा है, यह प्रस्तुति विद्यार्थियों के लिए रुचिकर और उपयोगी सिद्ध होगी। आपसे अनुरोध है कि अपने अनुभवों और उपयोगी सुझावों से मुझे अवगत कराएँ।

धन्यवाद!

-लेखक

विषय सूची

खंड-'क' : व्याकरण (Grammar)

1. भाषा, लिपि और व्याकरण (Language, Script and Grammar) ... 5
2. वर्ण-विचार (Phonology) ... 10
3. शब्द-विचार (Morphology) ... 14
4. वाक्य-विचार (Syntax) ... 18
5. संज्ञा (Noun) ... 21
6. लिंग, वचन और कारक (Gender, Number and Case) ... 28
7. सर्वनाम (Pronoun) ... 37
8. विशेषण (Adjective) ... 43
9. क्रिया (Verb) ... 50
10. क्रिया, काल और वाच्य (Verb, Tens and Voice) ... 54
11. विराम-चिह्न (Punctuation Marks) ... 60
12. शब्द-भंडार (Vocabulary) ... 63
13. शुद्ध वाक्य प्रयोग (Uses of Correct Sentences) ... 71
14. मुहावरे (Idioms) ... 74

खंड-'ख' : रचना (Composition)

15. पत्र-लेखन (Letter-Writing) ... 77
16. कहानी-लेखन (Story-Writing) ... 81
17. निबंध-लेखन (Essay-Writing) ... 84
18. अनुच्छेद-लेखन (Paragaph-Writing) ... 87
19. संवाद-लेखन (Dialogue-Writing) ... 89
20. अपठित गद्यांश (Unseen Passage) ... 90
21. डायरी-लेखन (Diary-Writing) ... 93
22. चित्र-वर्णन (Picture Description) ... 95
23. विज्ञापन-लेखन (Advertisement-Writing) ... 96

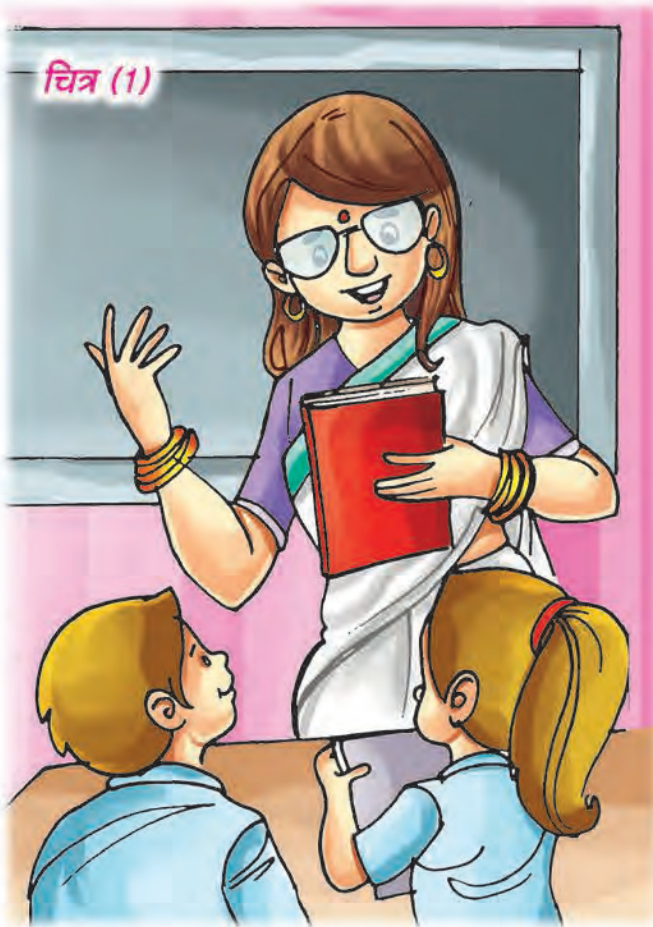


1

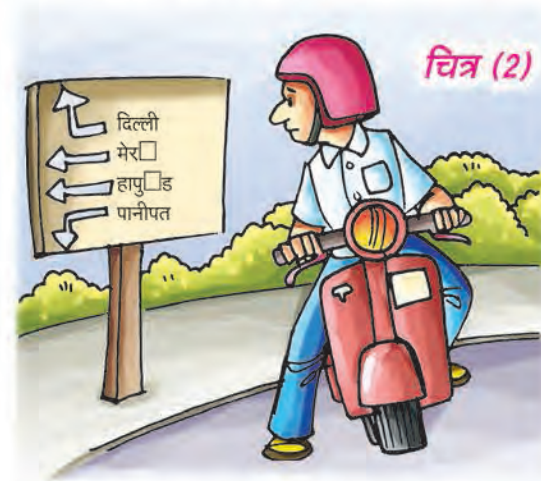
भाषा, लिपि और व्याकरण (Language, Script and Grammar)

मनुष्य की बोलने की क्षमता ईश्वर का उसे दिया अनुपम उपहार है। वाणी के द्वारा मनुष्य अपने मनोभाव व विचार दूसरों को समझाता है और दूसरों के विचार व मनोभाव स्वयं समझता है। यह सब जिस साधन द्वारा संभव होता है, वह भाषा है।

नीचे दिए गए चित्रों के माध्यम से भाषा को समझने में आपको सुविधा होगी-



चित्र (1)



चित्र (2)



चित्र (3)

दिए गए इन चित्रों में-

चित्र (1) में अध्यापिका जी ने अपनी बात बोलकर समझाई और बच्चों ने सुनकर समझी।

चित्र (2) में व्यक्ति ने बोर्ड पढ़कर किसी बात को समझा।

चित्र (3) में बालक पत्र लिखकर अपनी बात या भाव दूसरों पर प्रकट कर रहा है।

यही भाषा है।

भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा बोलकर या लिखकर अपने भाव और विचार दूसरों तक पहुँचाए जाते हैं और सुनकर या पढ़कर उनके विचार स्वयं समझे जाते हैं।

वैसे तो ध्वनियाँ पशु-पक्षी भी अपने मुख से निकालते हैं किंतु उन्हें भाषा नहीं कहा जा सकता। भाषा के अंतर्गत तो केवल वही सार्थक ध्वनियाँ आती हैं; जिनका प्रयोग मनुष्य द्वारा किया जाता है।

भाषा की विशेषताएँ-

1. भाषा सार्थक ध्वनियों के मेल से बनती है।
2. भाषा के द्वारा ही विचारों का आदान-प्रदान संभव है।
3. भाषा के प्रयोग का गौरव केवल मनुष्य को ही प्राप्त है, अन्य प्राणी प्रायः इससे वंचित हैं।

भाषा के रूप

भाषा के दो रूप होते हैं-

भाषा

मौखिक भाषा

लिखित भाषा

1. मौखिक भाषा-

भाषा का बोलकर प्रयोग किए जाने वाला रूप मौखिक भाषा कहलाता है; जैसे-भाषण सुनना, समाचार सुनना, कहानी सुनाना, घटना का वर्णन, आपसी बातचीत आदि।



2. लिखित भाषा-

भाषा का लिखकर व्यक्त किए जाने वाला रूप लिखित भाषा कहलाता है; जैसे-पत्र लिखना, उत्तर लिखना, डायरी लिखना आदि।



हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी है। यही हमारी राजभाषा भी है।

लिपि - किसी भी भाषा के वर्णों को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।

प्रत्येक भाषा के कुछ लिपि चिह्न होते हैं।

हिंदी की लिपि देवनागरी है। कुछ अन्य भाषाओं की लिपियाँ इस प्रकार हैं-



भाषा		लिपि
अंग्रेजी	-	रोमन
पंजाबी	-	गुरुमुखी
उर्दू	-	अरबी - फ़ारसी
गुजराती	-	देवनागरी



हिंदी भाषा

परिचय और महत्त्व-

हिंदी भाषा का उद्भव संस्कृत भाषा से माना जाता है। अपने उद्भव के पश्चात् हिंदी में अनेक परिवर्तन और परिष्कार हुए हैं। आज हिंदी भारत में जन-जन द्वारा बोली व समझी जाने वाली लोकप्रिय भाषा है। इसे **14 सितंबर, 1949** को संविधान में राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। भारत में प्रमुख हिंदीभाषी क्षेत्र हैं-दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश आदि।

अपनी वैज्ञानिकता व लोकप्रियता के कारण हिंदी भाषा का विश्व में दूसरा स्थान है। भारत के अतिरिक्त नेपाल, मलेशिया, फिजी, इंडोनेशिया, मॉरीशस तथा जावा में भी हिंदी को बहुत लोकप्रियता प्राप्त है।

बोली तथा उपभाषा-

(क) बोली-किसी क्षेत्र में बोली जाने वाली वह भाषा जिसमें व्याकरण के नियमों का कुछ विशेष ध्यान नहीं रखा जाता, 'बोली' कहलाती है। इसका रूप प्रायः मौखिक ही होता है।

(ख) उपभाषा-जब किसी बोली में साहित्य रचना प्रारंभ हो जाती है तो वह उपभाषा कहलाती है।

तुलसीदास जी ने अपना महान् ग्रंथ श्रीरामचरितमानस 'अवधी' उपभाषा में तथा कवि सूरदास ने अपनी रचना सूरसागर 'ब्रज' उपभाषा में की है।

हिंदी की उपभाषाएँ-

1. पूर्वी हिंदी - अवधी, छत्तीसगढ़ी, बघेली।
2. पश्चिमी हिंदी - खड़ीबोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, हरियाणवी।
3. पहाड़ी हिंदी - कुमाऊँनी, हिमाचली, गढ़वाली।
4. बिहारी हिंदी - मैथिली, मगही, भोजपुरी।

व्याकरण

भाषा को शुद्ध रूप से लिखने व बोलने के नियमों को ही व्याकरण कहा जाता है। अतः व्याकरण भाषा संबंधी नियमों का शास्त्र कहा जा सकता है। इसके अंतर्गत हम अध्ययन करते हैं-

(क) वर्ण-विचार (ख) शब्द-विचार (ग) वाक्य-विचार

इनके विषय में हम आगामी अध्यायों में पढ़ेंगे।

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए-

(क) भाषा होती है-

केवल मौखिक

मौखिक एवं लिखित



(ख) लिपि का अर्थ है-

भाषा को लिखने का ढंग

वाक्यों को लिखने का ढंग



(ग) बोली से आशय है-

क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा

क्षेत्र विशेष में लिखी जाने वाली भाषा



(घ) हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया-

27 अक्टूबर, 1950 को

14 सितम्बर, 1949 को

2. निम्नलिखित प्रदेशों में कौन-सी भाषाएँ बोली जाती हैं?

(क) उत्तर प्रदेश _____

(ख) राजस्थान _____

(ग) जम्मू-कश्मीर _____

(घ) महाराष्ट्र _____

(ङ) गुजरात _____

(।) केरल _____

3. प्रश्नोत्तर-

(क) 'हिंदी भाषा का महत्त्व' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

(ख) व्याकरण किसे कहते हैं?

(ग) भाषा की विशेषताएँ क्या हैं?



क्रियात्मक कौशल

• निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए-

(क) मेरे दादी जी आई है।

(ख) उसके पास पाँच रुपया है।

(ग) चार बालक ने गीत गया।

(घ) क्या तुम नहा लिया?

• अपने विद्यालय के पुस्तकालय अथवा अंतर्जाल (इंटरनेट) के माध्यम से भारत देश के ऐसे पाँच महापुरुषों के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए जिन्होंने अहिंदी भाषा क्षेत्र में अथवा राष्ट्र में कार्य करके हिंदी भाषा की महिमा को गौरवान्वित किया हो।

• भाषा प्रयोगशाला से क्या-क्या लाभ होते हैं? कक्षा में परिचर्चा कीजिए।



2

वर्ण विचार (Phonology)

वर्ण और वर्णमाला

वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े न हो सकें, **वर्ण** कहलाती है।

किसी भाषा के सभी वर्णों के क्रमबद्ध समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।

हिंदी वर्णमाला में मुख्यतः तीन प्रकार के वर्ण होते हैं—स्वर, अयोगवाह और व्यंजन।

1. **स्वर (Vowels)**—जो वर्ण किसी अन्य वर्ण की सहायता के बिना बोले जाते हैं, उन्हें **स्वर** कहते हैं। इन्हें बोलते समय मुँह के अंदर की वायु बिना किसी रुकावट के बाहर निकलती है। हिंदी वर्णमाला में निम्नलिखित 11 स्वर होते हैं—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

स्वर के भेद

स्वर दो प्रकार के होते हैं—

(i) ह्रस्व स्वर, तथा (ii) दीर्घ स्वर।

(i) **ह्रस्व स्वर (Short Vowels)**—जिन स्वरों के बोलने में कम समय लगता है, उन्हें **ह्रस्व स्वर** कहते हैं; ह्रस्व स्वर चार होते हैं— अ, इ, उ, ऋ।

(ii) **दीर्घ स्वर (Long Vowels)**—जिन स्वरों के बोलने में समय अधिक लगता है, उन्हें **दीर्घ स्वर** कहते हैं। दीर्घ स्वर सात होते हैं— आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

2. **अयोगवाह (After Sounds)**—स्वरों और व्यंजनों के अतिरिक्त हिंदी वर्णमाला में 'अं' (अनुस्वार), 'अँ' (अनुनासिक) और 'अः' (विसर्ग) भी होते हैं। ये स्वरों के बाद लिखे जाते हैं। इन्हें '**अयोगवाह**' कहते हैं।

जो वर्ण न तो स्वर होते हैं और न ही व्यंजन, उन्हें **अयोगवाह** कहते हैं।

अनुस्वार [Nasal (')]—जिस स्वर के उच्चारण में हवा केवल 'नाक' से निकलती है और उच्चारण अधिक जोर से होता है, तो उसके ऊपर केवल बिंदु (') के रूप में लगाया जाता है। ऐसे स्वर **अनुस्वार** कहे जाते हैं; जैसे—अंक, डंक, शंख आदि।

अनुनासिक [Semi-nasal (ँ)]—जिस स्वर के उच्चारण में हवा 'नाक' और 'मुँह' दोनों से एक साथ बाहर निकलती है, तो उसके ऊपर केवल चंद्रबिंदु (ँ) लगाया जाता है; जैसे—साँस, काँसा, साँप, आँख आदि।

विसर्ग [Colon (:)]—जब किसी स्वर के उच्चारण में आधे 'ह' जैसी ध्वनि होती है, तो उसके अंत में विसर्ग (:) लगाते हैं; जैसे—अतः, स्वः, प्रायः, प्रातः आदि।

3. व्यंजन (Consonants)—जो वर्ण स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं, उन्हें व्यंजन कहते हैं। इन्हें बोलते समय मुँह के अंदर की वायु थोड़ी रुकावट के साथ बाहर निकलती है। हिंदी वर्णमाला में निम्नलिखित 35 व्यंजन होते हैं। ये सात भागों में बाँटे गए हैं—

वर्ग	व्यंजन				
कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण (ड़ ढ़)
तवर्ग	त	थ	द	ध	न
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म
अंतःस्थ	य	र	ल	व	
ऊष्म	श	ष	स	ह	



व्यंजन के भेद

व्यंजन के तीन भेद होते हैं—स्पर्श व्यंजन, अंतःस्थ व्यंजन, ऊष्म व्यंजन।

(i) स्पर्श व्यंजन (Mutes)—जिन व्यंजनों को बोलते समय जीभ मुँह के अंदर के विभिन्न भागों को स्पर्श करती हुई बाहर आती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इनकी कुल संख्या 25 होती है। इन्हें पाँच वर्गों में बाँटा गया है—

वर्ग	स्पर्श व्यंजन	उच्चारण स्थान	नाम
कवर्ग	क ख ग घ ङ	कंठ	कंठ्य
चवर्ग	च छ ज झ ञ	तालु	तालव्य
टवर्ग	ट ठ ड ढ ण	मूर्धा	मूर्धन्य
तवर्ग	त थ द ध न	दाँत	दंत्य
पवर्ग	प फ ब भ म	ओँठ	ओष्ठ्य

(ii) अंतःस्थ व्यंजन (Semi-Vowels)—अंतःस्थ का अर्थ है—मध्य में स्थित। जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ मुँह के अंदर के भागों को बहुत थोड़ा-सा स्पर्श करती है, उन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। य, र, ल, व अंतःस्थ व्यंजन हैं।

(iii) ऊष्म व्यंजन (Sibilants)—ऊष्म का अर्थ है—गरम। जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु मुँह के विभिन्न भागों से रगड़ खाती हुई बाहर आती है और गरमी पैदा करती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। श, ष, स, ह ऊष्म व्यंजन हैं।

संयुक्त व्यंजन

जो व्यंजन दो विभिन्न व्यंजनों के मेल से बनते हैं, उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

ये मुख्य रूप से चार हैं—

क्ष = क + ष त्र = त् + र ज्ञ = ज् + ञ श्र = श् + र

द्वित्व व्यंजन

जब एक व्यंजन ध्वनि अपने जैसी अन्य व्यंजन ध्वनि से मिलती है, तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं।

जैसे— क् + क = क्क पक्का ज् + ज = ज्ज सज्जन
च् + च = च्च सच्चा म् + म = म्म सम्मान

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. रिक्त स्थान भरिए—

- (क) दीर्घ स्वर _____ होते हैं।
 (ख) हिंदी वर्णमाला में _____ व्यंजन होते हैं।
 (ग) य, र, ल, व _____ व्यंजन हैं।
 (घ) संयुक्त व्यंजन _____ होते हैं।
 (ङ) 'अं', 'अँ' और 'अः' को _____ कहते हैं।



2. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (x) का निशान लगाइए—

- (क) किसी अन्य वर्ण की सहायता के बिना बोले जाने वाले वर्ण स्वर होते हैं।

(ख) स्पर्श व्यंजन सात वर्गों में बँटे होते हैं।

(ग) ऊष्म व्यंजन चार होते हैं।

(घ) क्ष, त्र, ज्ञ और श्र द्वित्व व्यंजन हैं।



3. स्वर तथा व्यंजन से प्रारंभ होने वाले शब्दों को अलग कीजिए-

असमान, व्यक्ति, हर्ष, विद्यालय, आकांक्षा, ईर्ष्या, शृंगार,
उन्नति, पराजय, विकसित, अभिमान, पराकाष्ठा, तुम, आज

स्वर _____

व्यंजन _____

4. प्रश्नोत्तर-

(क) स्वर किसे कहते हैं? ये कितने और कौन-कौन से होते हैं?

(ख) ह्रस्व और दीर्घ स्वर में अंतर लिखिए।

(ग) अंतःस्थ व्यंजन किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

(घ) द्वित्व व्यंजन किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।



क्रियात्मक कौशल

- अपने परिवार या विद्यालय में से किन्हीं दस प्राणियों या वस्तुओं के नाम अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखें, तत्पश्चात् उनका वर्ण-विच्छेदन करें।
- किन्हीं पाँच द्वित्व व्यंजन और पाँच संयुक्ताक्षरों से बने नाम अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखें।



शब्द-विचार (Morphology)

शब्द

दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को **शब्द** कहते हैं; जैसे-नाव, दवाई, आगरा, पुस्तक आदि। उपर्युक्त उदाहरण में दिए सभी शब्द कई वर्णों के मेल से बने हैं। इन सभी शब्दों का कोई-न-कोई अर्थ अवश्य है। अतः ये सभी 'शब्द' हैं।

यदि वर्णों के मेल का कोई अर्थ न हो, तो वह 'शब्द' नहीं हो सकता; जैसे-रीहो, वाईद, वना, पयन आदि।

पद

जब कोई शब्द वाक्य में प्रयोग होता है, तो उसे पद कहते हैं। जैसे- मित्र पेड़ पर चढ़ गया। यह वाक्य पाँच पदों से बना है।

शब्दों का वर्गीकरण

शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित तीन आधारों पर किया जा सकता है-

1. उत्पत्ति के आधार पर
2. बनावट के आधार पर
3. प्रयोग के आधार पर

1. उत्पत्ति के आधार पर (Words based on Origin)

उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं-

(क) तत्सम शब्द (ख) तद्भव शब्द (ग) देशज शब्द (घ) विदेशी शब्द

(क) **तत्सम शब्द (Sanskrit Words)**- संस्कृत से हिंदी में आए हुए ऐसे शब्द जो अपने मूलरूप में ही प्रयोग किए जाते हैं, **तत्सम शब्द** कहलाते हैं; जैसे- अग्नि, अधीन, अध्यक्ष, आक्रमण, आरंभ आदि।

(ख) **तद्भव शब्द (Modified Words)**-संस्कृत भाषा के वे शब्द जो हिंदी में थोड़े बदले हुए रूप में प्रयोग होते हैं; **तद्भव शब्द** कहलाते हैं; जैसे-

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अंधकार	अँधेरा	आश्चर्य	अचरज	अक्षि	आँख
अग्नि	आग	अश्रु	आँसू	एकत्र	इकट्ठा
कुपुत्र	कपूत	चंद्र	चाँद	ग्राहक	गाहक

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
चूर्ण	चून	ज्येष्ठ	जेठ	दुग्ध	दूध
पत्र	पत्ता	नग्न	नंगा	हस्त	हाथ

(ग) **देशज शब्द (Native Words)**—हिंदी में प्रयोग होने वाली प्रांतीय बोलियों के शब्द **देशज शब्द** कहलाते हैं; जैसे—कपास, खिचड़ी, तोरई, खाट, बाजरा आदि।

(घ) **विदेशी शब्द (Foreign Words)**—जो शब्द विदेशी भाषाओं से आकर हिंदी भाषा में प्रयोग होने लगे हैं, उन्हें **विदेशी शब्द** कहते हैं; जैसे—

अंग्रेजी शब्द - अपील, आइसक्रीम, इंजीनियर, कोट, बिस्कुट, पार्सल आदि।

अरबी शब्द - अखबार, औरत, मालिक, मुहावरा, दफ़्तर, रिश्वत आदि।

फ़ारसी शब्द - उम्मीद, गुलाब, खुशामद, स्याही, सिरफ़ारिश, हिम्मत आदि।

तुर्की शब्द - कुरता, कैंची, बारूद, लाश, दारोगा, चाकू, सौगात आदि।

2. बनावट के आधार पर (Words based on Construction)–

बनावट के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं—

(क) रूढ़ शब्द

(ख) यौगिक शब्द

(ग) योगरूढ़ शब्द

(क) **रूढ़ शब्द (Traditional Words)**—जिन शब्दों के सार्थक खंड नहीं किए जा सकते, उन्हें **रूढ़ शब्द** कहते हैं; जैसे— तोता, घोड़ा, छत, घर, लोटा आदि।

(ख) **यौगिक शब्द (Combined Words)**—जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक खंडों के मेल से बनते हैं, उन्हें **यौगिक शब्द** कहते हैं; जैसे—

सहपाठी = सह + पाठी मिठाईवाला = मिठाई + वाला

(ग) **योगरूढ़ शब्द (Compound Words)**—जो यौगिक शब्द विशेष अर्थ में प्रयोग होते हैं, उन्हें **योगरूढ़ शब्द** कहते हैं; जैसे— पीतांबर (पीला है वस्त्र जिसका अर्थात् विष्णु), जलज (जल में जन्म लेने वाला अर्थात् कमल), चौपाया (चार पैरों वाला पशु) आदि।

3. प्रयोग के आधार पर (Words based on Uses)–

प्रयोग के आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं—

(क) विकारी शब्द

(ख) अविकारी शब्द

(क) **विकारी शब्द (Variable Words)**—जिन शब्दों के रूप में वचन, लिंग, पुरुष तथा काल के कारण कुछ विकार पैदा हो जाते हैं, उन्हें **विकारी शब्द** कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द होते हैं; जैसे—

संज्ञा	बच्चा, बच्चे, बच्चों, लड़का, लड़के, लड़कों आदि।
सर्वनाम	वह, उसने, उसे, वे, उन्हें, उन्होंने आदि।
विशेषण	नीला, नीली, नीले, पीला, पीली, पीले आदि।
क्रिया	पढ़ा, पढ़ी, पढ़ता है, पढ़ता हूँ, पढ़ते हैं आदि।



(ख) **अविकारी शब्द (Invariable Words)**—जिन शब्दों के रूप में प्रयोग करते समय कोई परिवर्तन नहीं होता, उन्हें **अविकारी शब्द** कहते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं—क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक; जैसे—

क्रियाविशेषण	आज, नहीं, जल्दी, अवश्य, कब, कहाँ आदि।
संबंधबोधक	में, पर, से, को, तक, नीचे, ऊपर आदि।
समुच्चयबोधक	और, तथा, कि, किंतु, तो, या, परंतु आदि।
विस्मयादिबोधक	अहा, आह, अरे, वाह, शाबाश आदि।



अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. दिए गए विदेशी शब्दों का उनके हिंदी अर्थ से मेल मिलाइए—

इस्तीफा	चिकित्सक	मरीज	समय
डॉक्टर	न्यायालय	टाइम	विज्ञान
कोर्ट	त्यागपत्र	फीस	विद्यालय
प्रिंसिपल	विवाह	स्कूल	रोगी
शादी	प्रधानाचार्य	साइंस	शुल्क

2. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (x) का निशान लगाइए—

- (क) संस्कृत से हिंदी में आए कुछ शब्द अपने मूलरूप में प्रयोग होने पर तद्भव शब्द कहलाते हैं।
- (ख) हिंदी में प्रयोग होने वाले प्रांतीय बोलियों के शब्द देशज शब्द कहलाते हैं।
- (ग) विदेशी भाषाओं से आकर हिंदी में प्रयोग होने वाले शब्द विदेशी शब्द होते हैं।
- (घ) जिन शब्दों के सार्थक खंड नहीं किए जा सकते, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं।

3. लिखिए-

- (क) तीन तत्सम शब्द _____
- (ख) तीन तद्भव शब्द _____
- (ग) तीन देशज शब्द _____
- (घ) तीन विदेशी शब्द _____
- (ङ) तीन रूढ़ शब्द _____

4. प्रश्नोत्तर-

- (क) शब्द किसे कहते हैं? उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के कितने भेद होते हैं?

- (ख) बनावट के आधार पर शब्दों के भेद लिखिए।

- (ग) यौगिक शब्द से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित लिखिए।

- (घ) विकारी शब्द और अविकारी शब्द में क्या अंतर है?



क्रियात्मक कौशल

- मानव शरीर के प्रमुख अवयवों के तत्सम-तद्भव रूप खोजकर लिखिए; जैसे-

- (क) आँख / अक्ष _____
- (ख) हाथ / हस्त _____



4

वाक्य विचार (Syntax)

इन वाक्यों को पढ़िए और समझिए-

- (क) संगीता चाय पी रही है।
- (ख) हमें प्रदूषण से बचना चाहिए।
- (ग) आर्यन पत्र लिखता है।
- (घ) प्रातः काल शुद्ध वायु चलती है।



इन वाक्यों में अनेक शब्द हैं। प्रत्येक शब्द का अर्थ अवश्य है। ये आपस में मिलकर पूरा अर्थ प्रकट कर रहे हैं। अतः दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

वाक्य के अंग

वाक्य के दो अंग होते हैं-

1. उद्देश्य

2. विधेय

1. **उद्देश्य (Subject)**- वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उसे **उद्देश्य** कहते हैं; जैसे-

- (क) प्रधानमंत्री जी विदेशी दौरे पर हैं।
- (ख) कुत्ता वफादार जानवर है।
- (ग) तोता 'राम-राम' कह रहा है।

इन वाक्यों में 'प्रधानमंत्री जी', 'कुत्ता' और 'तोता' उद्देश्य हैं।

2. **विधेय (Predicate)**-वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं। उपर्युक्त वाक्यों में 'विदेशी दौरे पर हैं', 'वफादार जानवर है' और 'राम-राम कह रहा है' विधेय हैं।

समझिए-

उद्देश्य

विधेय

- 1. राम ने रावण को मारा।
- 2. पांडु-पुत्र पांडव कहलाए।
- 3. सिंह जंगल में दहाड़ता है।

- 1. राम ने
- 2. पांडु-पुत्र
- 3. सिंह

- रावण को मारा।
- पांडव कहलाए।
- जंगल में दहाड़ता है।

वाक्य के प्रकार

वाक्य निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं-

1. साधारण वाक्य

2. नकारात्मक वाक्य

3. प्रश्नवाचक वाक्य

4. आज्ञार्थक वाक्य

1. **साधारण वाक्य (Simple Sentences)**-जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने का सामान्य कथन हो, उसे साधारण वाक्य कहते हैं; जैसे-

(क) बच्चे पार्क में खेलते हैं।

(ख) मेरे माता-पिता रोज मंदिर जाते हैं।

2. **नकारात्मक वाक्य (Negative Sentences)**-जिन वाक्यों में क्रिया के न करने या न होने का भाव हो, उन्हें नकारात्मक वाक्य कहते हैं; जैसे-

(क) छात्र पुस्तक नहीं पढ़ रहे हैं।

(ख) शीला दूध नहीं पी रही है।

3. **प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative Sentences)**-जिन वाक्यों में कोई प्रश्न किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे-

(क) क्या आपकी बहन बीमार है?

(ख) लक्षिता क्या कर रही है?

4. **आज्ञार्थक वाक्य (Imperative Sentences)**-जिन वाक्यों में आज्ञा, निवेदन या प्रार्थना का बोध होता है, उन्हें आज्ञार्थक वाक्य कहते हैं; जैसे-

(क) बच्चो, शांत रहो।

(ख) कृपया बाहर जाओ।

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य और विधेय अलग-अलग कीजिए-

वाक्य	उद्देश्य	विधेय
(क) सूरज पूरब में निकलता है।	_____	_____
(ख) रात में तारे चमकते हैं।	_____	_____
(ग) सौरभ क्रिकेट खेलेगा।	_____	_____
(घ) पुलकित विद्यालय चला गया।	_____	_____
(ङ) धोबी कपड़े धो चुका है।	_____	_____

2. सही विकल्प के सामने (✓) का निशान लगाइए-

- (क) जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उसे _____ कहते हैं।
- | | | | |
|--------|--------------------------|----------|--------------------------|
| क्रिया | <input type="checkbox"/> | उद्देश्य | <input type="checkbox"/> |
| विधेय | <input type="checkbox"/> | कोई नहीं | <input type="checkbox"/> |
- (ख) उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, उसे _____ कहते हैं।
- | | | | |
|----------|--------------------------|----------|--------------------------|
| उद्देश्य | <input type="checkbox"/> | वाक्य | <input type="checkbox"/> |
| विधेय | <input type="checkbox"/> | कोई नहीं | <input type="checkbox"/> |
- (ग) दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक समूह को _____ कहते हैं।
- | | | | |
|-------|--------------------------|----------|--------------------------|
| वाक्य | <input type="checkbox"/> | वर्ण | <input type="checkbox"/> |
| शब्द | <input type="checkbox"/> | कोई नहीं | <input type="checkbox"/> |

3. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए-

- (क) मनीषा बाजार गई है। (नकारात्मक)
- (ख) साधु के पास कमंडल है। (प्रश्नवाचक)
- (ग) पक्षी कहाँ रहते हैं? (साधारण)
- (घ) अंजलि पुस्तक पढ़ती है। (आज्ञार्थक)

4. प्रश्नोत्तर-

- (क) वाक्य किसे कहते हैं? सोदाहरण लिखिए।

- (ख) वाक्य के कितने अंग होते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

- (ग) वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?

- (घ) नकारात्मक वाक्य किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।



क्रियात्मक कौशल

- अपनी पाठ्य-पुस्तक के किसी पाठ में से वाक्यों को सरल, संयुक्त तथा मिश्र वाक्य के रूप में अलग-अलग करिए।



5

संज्ञा (Noun)

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान व भाव आदि के नाम को **संज्ञा** कहते हैं।

संज्ञा किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के बारे में ज्ञान कराती है। हम कभी-भी संज्ञा की पहचान बड़ी सरलता से कर सकते हैं। **जैसे-** मेज़, मित्र, जम्मू, प्रसन्नता आदि सभी संज्ञा शब्द हैं। वाक्य के लिए संज्ञा का ज्ञान होना आवश्यक है।

आइए कुछ उदाहरण देखें!

1. नीलम पढ़ने जा रही है।
2. पिता जी बंटी से प्रसन्न हैं।
3. शालिनी मेज़ से चाकू लेकर आओ।
4. भारत की राजधानी दिल्ली है।
5. वे दोनों मित्र हैं।



ये शब्द- नीलम, प्रसन्न, शालिनी, मेज़, चाकू, भारत, दिल्ली, मित्र संज्ञा शब्द हैं।

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान व भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के मुख्य तीन व संपूर्ण पाँच भेद होते हैं-

संज्ञा के मुख्य भेद-

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. भाववाचक संज्ञा

इनके अतिरिक्त कुछ विद्वान् समुदायवाचक और द्रव्यवाचक संज्ञा को भी संज्ञा के अंतर्गत मानते हैं।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा-

जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, विशेष प्राणी, विशेष स्थान या विशेष वस्तु का पता चलता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे-



लाल बहादुर शास्त्री



श्रीमद्भगवत् गीता



गंगा नदी



सूरज

इन चित्रों में आपने देखा-

लालबहादुर शास्त्री-विशेष व्यक्ति हैं।

गंगा नदी-विशेष नदी है।

श्रीमद्भगवत् गीता-विशेष पुस्तक है।

सूरज-विशेष प्रकाशपुंज है।

अतः ये सभी व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाएँगे।

2. जातिवाचक संज्ञा-

बच्चा छत पर गुब्बारे से खेल रहा है।

इस उदाहरण में बच्चा, छत और गुब्बारा किसी विशेष व्यक्ति स्थान या वस्तु को नहीं बता रहे हैं बल्कि इनकी पूरी जाति के बारे में बता रहे हैं। ये विशेष नाम नहीं हैं बल्कि साधारण नाम हैं।

जिस संज्ञा शब्द से एक ही प्रकार के सभी प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों का पता चलता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

अन्य उदाहरण - इमारत, फूल, मेज़, पुस्तक, पहाड़, विद्यार्थी आदि।



3. भाववाचक संज्ञा-

सिद्धार्थ को हंस पर दया आई।

इस उदाहरण में दया एक भाव है। इसे अनुभव किया जा सकता है किंतु देखा या छुआ नहीं जा सकता।

जिन संज्ञा शब्दों से किसी भाव, दशा, गुण, दोष या कार्य आदि का पता चलता है; उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।



अन्य उदाहरण-अच्छाई, सच्चाई, बचपन, बुढ़ापा, वीरता, क्रोध, प्रेम, सुख, दुःख आदि।

इसके अतिरिक्त कुछ विद्वान् समुदायवाचक संज्ञा व द्रव्यवाचक संज्ञा को भी संज्ञा का भेद मानते हैं। समुदाय का बोध कराने वाले शब्द 'समुदायवाचक संज्ञा' कहलाते हैं; जैसे-सेना, मंडली, झुंड, टीम, संघ आदि।

द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्द द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे-घी, तेल, सोना, चाँदी, लकड़ी, लोहा आदि।

भाववाचक संज्ञा बनाना

जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों से प्रायः भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है। आगे दिए गए उदाहरणों को पढ़कर उन्हें जानिए-

जातिवाचक संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञा-

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बूढ़ा	बुढ़ापा
लड़का	लड़कपन
मित्र	मित्रता
बच्चा	बचपन
मनुष्य	मनुष्यता
पशु	पशुता / पशुत्व
शिशु	शैशव

सर्वनामों से भाववाचक संज्ञा-

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
पराया	परायापन
मम	ममता / ममत्व
अपना	अपनापन / अपनत्व
सर्व	सर्वस्व
निज	निजत्व
स्व	स्वत्व

विशेषणों से भाववाचक संज्ञा-

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
अच्छा	अच्छाई
प्यासा	प्यास
सफल	सफलता



विशेषण

सफ़ेद

मीठा

उदार

हरा

गंदा

खट्टा

सुंदर

मैला

भाववाचक संज्ञा

सफ़ेदी

मिठास

उदारता

हरियाली

गंदगी

खटास

सुंदरता / सौंदर्य

मैल

क्रियाओं से भाववाचक संज्ञा-

क्रिया

हँसना

लूटना

खेलना

लिखना

बहना

चलना

थकना

मिलना

पूजना

रहना-सहना

गिरना

देखना-भालना

छटपटाना

पढ़ना

भाववाचक संज्ञा

हँसी

लूट

खेल

लेख, लिखाई

बहाव

चाल

थकान / थकावट

मेल

पूजा

रहन-सहन

गिरावट

देखभाल

छटपटाहट

पढ़ाई

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए-

(क) इनमें से कौन-सा संज्ञा का भेद नहीं है?

व्यक्तिवाचक

पुरुषवाचक

जातिवाचक

भाववाचक

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा का उदाहरण चुनिए-

गंगा

गीता

गंगा और गीता

ये सभी

(ग) जातिवाचक संज्ञा का उदाहरण चुनिए-

महानगर

महाभारत

महाराष्ट्र

कोई नहीं

2. शब्दों के सामने उसका संज्ञा भेद लिखिए-

कोलकाता

-

हँसी

-

बकरी

-

रूमाल

-

राणा प्रताप

-

3. प्रश्नोत्तर-

(क) भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं?

(ख) जातिवाचक संज्ञा को स्पष्ट कीजिए।

4. व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों पर गोला खींचिए-

फ्रांस,

मछुआ,

चाँदी,

कुर्ता,

लक्ष्मीबाई,

शशांक,

खटास,

हिमालय,

गोदावरी,

भारत,

गाय,

गठरी।



क्रियात्मक कौशल

• भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए-

गिरना -

-

प्यासा -

-

सफल -

-

सफ़ेद -

-

निज -

-

पशु -

-

शिशु -

-

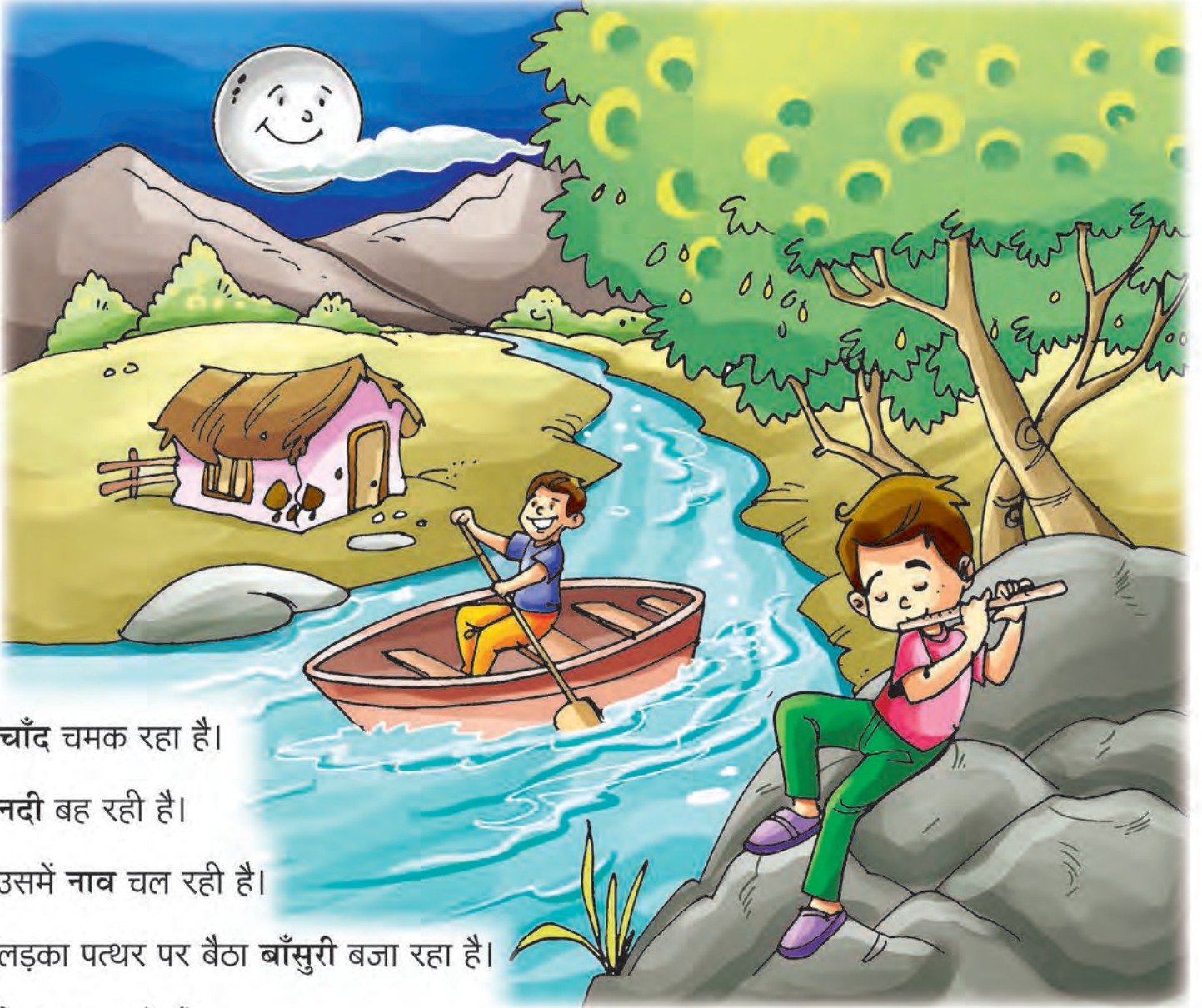
- संज्ञा के सभी भेदों के नाम याद कर कक्षा में सुनाइए।
- इंद्रधनुष में सात रंग होते हैं। इन सभी रंगों के नाम लिखें। क्या इन सभी रंगों से भाववाचक संज्ञा बनाई जा सकती है? जैसे- लाल से लालिमा।
- किसी भी दैनिक हिंदी समाचार-पत्र से कोई एक घटना काटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में चिपकाएँ और उनमें से संज्ञा के सभी भेदों को छाँटकर लिखें और कक्षा में प्रदर्शित करें।



6

लिंग, वचन और कारक

(Gender, Number and Case)



चाँद चमक रहा है।

नदी बह रही है।

उसमें नाव चल रही है।

लड़का पत्थर पर बैठा बाँसुरी बजा रहा है।

पेड़ लहरा रहे हैं।

ऊपर लिखे वाक्यों में चाँद, लड़का, पेड़ आदि शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है तथा नदी, बाँसुरी, नाव आदि शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है।

संज्ञा के जिस रूप से उसके स्त्री जाति अथवा पुरुष जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग बदलने पर संज्ञा का रूप भी बदल जाता है।

लिंग के भेद

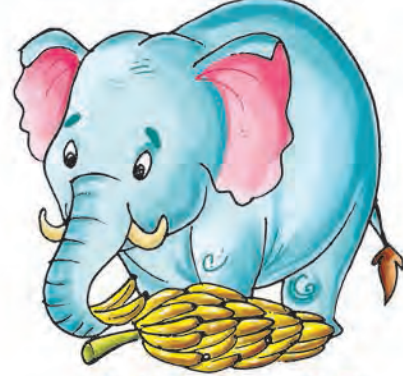
लिंग के दो भेद होते हैं-

1. स्त्रीलिंग
2. पुल्लिंग

1. स्त्रीलिंग-



धोबिन कपड़े धो रही है।



हथिनी केले खा रही है।

इन वाक्यों में धोबिन और हथिनी शब्द स्त्री जाति को प्रकट कर रहे हैं।

शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

अन्य उदाहरण-हिरनी, बकरी, मोरनी, कटोरी, भाभी, चाची, खड़की, मुर्गी आदि।

2. पुल्लिंग-



कबूतर उड़ता है।



माली पौधों को पानी दे रहा है।

इन वाक्यों में कबूतर और माली शब्द पुरुष जाति को प्रकट कर रहे हैं।

शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं।

अन्य उदाहरण- मुर्गा, पंख्रा, दरवाजा, बल्ब, जूता, भोजन, मोर, मामा, चाचा आदि।

ये नाम सदैव पुल्लिंग होते हैं-

दिनों के नाम (सोमवार, मंगलवार आदि)

ग्रहों के नाम (शुक्र, सूर्य, बुध आदि)

पहाड़ों के नाम (हिमालय, सतपुड़ा आदि)

राज्यों के नाम (पंजाब, महाराष्ट्र आदि)

महीनों के नाम (जनवरी, फरवरी आदि)

समुद्रों के नाम (हिंद महासागर, प्रशांत महासागर आदि)

देशों के नाम (भारत, रूस आदि)

पेड़ों के नाम (पीपल, शीशम आदि)

ये नाम सदैव स्त्रीलिंग होते हैं-

नदियों के नाम - गंगा, यमुना आदि।

झीलों के नाम - नैनी, डल आदि।

भाषाओं के नाम - फ्रेंच, अंग्रेजी आदि।

बोलियों के नाम - अवधी, बघेली आदि।

लिपियों के नाम - देवनागरी, रोमन आदि।

नक्षत्रों के नाम - कृतिका, भरणी।

समुदायवाचक संज्ञा शब्द - भीड़, मंडली आदि।

इन उदाहरणों को पढ़कर समझिए-

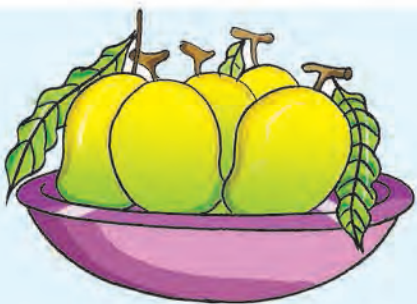
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
दादा	दादी
लड़का	लड़की
चूहा	चुहिया
ससुर	सास
शेर	शेरनी
भाई	बहन
बेटा	बेटी
मामा	मामी

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
घोड़ा	घोड़ी
लोटा	लुटिया
छात्र	छात्रा
मोर	मोरनी
बैल	गाय
ऊँट	ऊँटनी
पोता	पोती
पति	पत्नी

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मुरगा	मुरगी
नौकर	नौकरानी
माली	मालिन
युवक	युवती
ताऊ	ताई
साँप	साँपिन
पुरुष	स्त्री
वर	वधू
अध्यापक	अध्यापिका
ग्वाला	ग्वालिन
नायक	नायिका
राजा	रानी
पिता	माता
कुम्हार	कुम्हारिन
भिखारी	भिखारिन

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सेठ	सेठानी
बकरा	बकरी
हिरन	हिरनी
मालिक	मालकिन
बंदर	बंदरिया
हाथी	हथिनी
नाई	नाइन
आदमी	औरत
सेवक	सेविका
पाठक	पाठिका
श्रीमान	श्रीमती
नर	नारी
महाराजा	महारानी
देव	देवी
प्रधानाचार्य	प्रधानाचार्या

वचन



टोकरी में आम हैं।



टोकरीयों में आम हैं।

'टोकरी' शब्द से संख्या के एक होने का पता चलता है और 'टोकरीयों' शब्द से संख्या में अनेक होने का। शब्द के ये रूप वचन कहलाते हैं।

संज्ञा के जिस रूप से उसके एक अथवा अनेक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।

वचन दो प्रकार के होते हैं-

1. एकवचन

2. बहुवचन

1. एकवचन-

संज्ञा के जिस रूप से उसके संख्या में एक होने का पता चलता है; उसे एकवचन कहते हैं; जैसे-लड़का, कमरा, चाबी, पुस्तक आदि।

2. बहुवचन-

संज्ञा के जिस रूप से उसके संख्या में दो या दो से अधिक होने का पता चलता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे-लड़के, कमरे, चाबियाँ, पुस्तकें आदि।

कुछ अन्य उदाहरण भी पढ़िए-

एकवचन	बहुवचन
माता	माताएँ
बच्चा	बच्चे
बात	बातें
घोड़ा	घोड़े
कुरता	कुरते
बेटा	बेटे
कला	कलाएँ
रोटी	रोटियाँ
कक्षा	कक्षाएँ
मैं	हम
सखी	सखियाँ
स्त्री	स्त्रियाँ
रुपया	रुपये

एकवचन	बहुवचन
आँख	आँखें
रात	रातें
चादर	चादरें
कपड़ा	कपड़े
माला	मालाएँ
गधा	गधे
पुस्तक	पुस्तकें
जूता	जूते
औरत	औरतें
मछली	मछलियाँ
पूरी	पूरियाँ
नाली	नालियाँ
वस्तु	वस्तुएँ

कारक

इस अनुच्छेद को पढ़िए-

युद्ध में अर्जुन ने जब देखा कि उसके अपने ही गुरुजन और संबंधी हैं तो उसने युद्ध से इनकार कर दिया। उसका कहना था कि वह उनसे युद्ध नहीं कर सकता।

ऊपर लिखे वाक्यों में रंगीन शब्दों में, में, ने, से आदि का प्रयोग किया गया है। ये शब्द अन्य शब्दों का आपस में संबंध प्रकट कर रहे हैं, इन्हें ही कारक-चिह्न कहते हैं।



वाक्य में संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के दूसरे शब्दों से उसका संबंध पता चलता है, उसे कारक कहते हैं।

कारक के भेद

कारक आठ प्रकार के होते हैं-

कारक

कर्ता

कर्म

करण

संप्रदान

अपादान

संबंध

अधिकरण

संबोधन

कारक-चिह्न

ने

को

से

के लिए

से (अलग होने का भाव)

का, के, की;

रा, रे, री

में, पर

हे ! अरे !



कारक-चिह्नों का वाक्यों में प्रयोग-

1. कर्ता कारक (ने)

(क) सुरभि ने नाश्ता बनाया।

अथवा

सुरभि नाश्ता बनाती है।



(ख) मीरा ने भोजन खाया।

अथवा

मीरा भोजन खाती है।



2. कर्मकारक (को)

पंडित जी को बुलाओ।

उनको दक्षिणा दो।



3. करण कारक (से)

तुम साइकिल से बाजार जाओ।

बाजार से आलू ले आओ।

4. संप्रदान कारक (के लिए)

नीता के लिए ऊन लाना और उसके लिए स्वेटर बुन देना।



5. अपादान कारक (से)

पेड़ से पत्ते गिरे।

छत से बूँदें टपकीं।

6. संबंध कारक (का, के, की; रा, रे, री)

यह मेरा बस्ता है।

यह गणित की पुस्तक है।



7. अधिकरण कारक (में, पे, पर)

इस कढ़ाई में तेल है।

इसे स्टोव पर रख दो।

8. संबोधन कारक (हे, अरे)

हे राम ! इतनी निर्धनता।

अरे भाई ! यह लो पाँच रुपये।



अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए-

(क) संज्ञा का विकारी तत्त्व कौन-सा नहीं है?

लिंग

कारक

वचन

सभी

(ख) 'मछली' शब्द का लिंग परिवर्तन क्या होगा?

मछला

नर मछली

मादा मछली

कोई नहीं

(ग) रोटी शब्द का वचन बदलें-

रोटीयाँ

रोटियाँ

रोटियों

रोटीएँ

(घ) 'राम अँधरे से डरता है' में कौन-सा कारक है?

करण कारक

संबंध कारक

संप्रदान कारक

कोई नहीं



2. सही स्थान पर लिखिए-

चाँद, चुहिया, शेर, नदी, सूरत, चम्मच, कटोरी, हाथी, बरफी, थाल, समोसा, चाबी, मेज, कुर्सी, रसगुल्ला।

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

3. बहुवचन लिखिए-

मछली
पूरी
रुपया
रोटी

कुरता
कला
आँख
बेटा

4. प्रश्नोत्तर-

कारक किसे कहते हैं?



क्रियात्मक कौशल

- दिए गए कारक-चिह्नों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य लिखिए-

का _____

के लिए _____

से _____

हे _____



7

सर्वनाम (Pronoun)

सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वाक्य के संज्ञा शब्द (व्यक्ति, स्थान, वस्तु, प्राणी) आदि के स्थान पर किया जाता है। जैसे-

1. माँ ने **उसका** माथा छूकर देखा।
2. **मैं** तुम्हारे साथ चलती हूँ।
3. **आप** आज ही सुनिश्चित कर लें।
4. उसे **अपनी** गलती का अहसास हो चुका था।
5. **हम** आपकी शिकायत कर देंगे।



उपर्युक्त वाक्यों में उसका, मैं, तुम्हारे, आप, उसे, अपनी, हम, आपकी सभी सर्वनाम शब्द हैं।

संज्ञा के स्थान पर जो शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं, वे **सर्वनाम** कहलाते हैं।

सर्वनाम शब्द वाक्य के अनुरूप प्रयोग किए जाते हैं। नीचे लिखे वाक्यों में रंगीन शब्द सर्वनाम हैं, इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए-

1. भोजन करके दादा जी **अपने** कमरे में चले गए।
2. क्या **वे** तुम्हारे मित्र हैं?
3. मुझे खाने के लिए **कुछ** दे दो।
4. मैं **स्वयं** चला जाऊँगा।
5. **तुम** कहाँ जा रहे हो?
6. वहाँ **कोई** रहता है।



7. उसके काम के लिए हम सब तैयार रहते हैं।

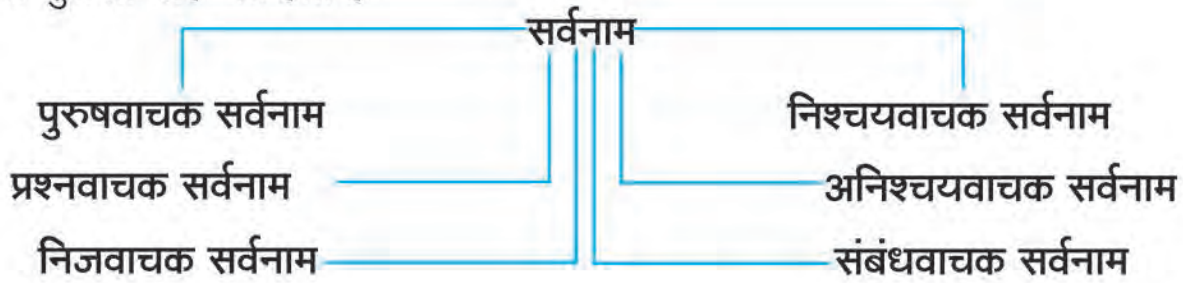
8. उसने बहुत बड़े-बड़े काम किए हैं।

सर्वनाम शब्दों का अधिक ज्ञान करने के लिए हमें सर्वनाम के भेदों का ज्ञान करना परमावश्यक है।



सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के मुख्यतः छह भेद होते हैं-



1. पुरुषवाचक सर्वनाम-

जो शब्द बोलने वाले, सुनने वाले या किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

माँ : मुन्नी मेरी शाल कहाँ है?

मुन्नी : वह तो प्रेसवाला ले गया था।
मैंने ही उसे दी थी।

माँ : तुमने उसे कहा था कि वह उसे समय पर दे जाए।

मुन्नी : हाँ जी, कहा था।

इस उदाहरण में आपने देखा कि तीन प्रकार के सर्वनाम शब्दों का प्रयोग हुआ है।



(क) उत्तम पुरुष-ऐसे सर्वनाम शब्द जो बोलने वाला अपने लिए प्रयुक्त करता है; जैसे-मैं, मेरा, मेरे लिए, हम आदि। यहाँ माँ ने अपने लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया है, वे उत्तम पुरुष के अंतर्गत आएँगे।

(ख) मध्यम पुरुष-ऐसे सर्वनाम शब्द जो सुनने वाले के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, मध्यम पुरुष के अंतर्गत आते हैं; जैसे-तुम, तुमने, तुम्हारे, तुझसे आदि।

यहाँ 'मुन्नी' के लिए प्रयुक्त सर्वनाम शब्द इसके अंतर्गत आएँगे।

(ग) अन्य पुरुष-ऐसे सर्वनाम शब्द जो जिनके बारे में बात की जा रही है, उनके लिए प्रयुक्त होते हैं, अन्य पुरुष के अंतर्गत आएँगे; जैसे-वह, उन्हें, उसे, उनसे आदि।

यहाँ 'प्रेसवाले के लिए' प्रयुक्त सर्वनाम इसके अंतर्गत आएँगे।

2. प्रश्नवाचक सर्वनाम-

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने या कुछ जानने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे-

- (क) क्या बजा है?
- (ख) पार्टी में कौन-कौन आएगा?
- (ग) आप किससे मिलना चाहते हैं?
- (घ) यह केक किसके लिए है?



3. निजवाचक सर्वनाम-



जब वक्ता अपने लिए 'आप', 'अपने आप', 'खुद' या 'स्वयं' का प्रयोग करता है, वहाँ निजवाचक सर्वनाम होता है।

मैं स्वयं चाय बनाऊँगा।

मैं खुद बैग उठा लूँगा।

मैं अपने आप सब काम निबटा लूँगा।

4. निश्चयवाचक सर्वनाम-

ऐसे सर्वनाम जो किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे-

- (क) यह एक सुंदर प्याली है।
- (ख) उसे वहाँ रख दो।
- (ग) इसने सारी प्लेटें सजा दी हैं।



5. अनिश्चयवाचक सर्वनाम-

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी अनिश्चित व्यक्ति, वस्तु या घटना का आभास हो, वहाँ अनिश्चयवाचक सर्वनाम होता है, जैसे-

- (क) दाल में कुछ गिरा है।
- (ख) आज कोई आएगा।
- (ग) किसी ने मुझे आवाज दी है।

6. संबंधवाचक सर्वनाम-

ऐसे सर्वनाम शब्द जिनसे वाक्य के दूसरे सर्वनाम शब्द से संबंध स्थापित किया जाए 'संबंधवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं।

प्रायः ऐसे सर्वनामों का प्रयोग मिश्र वाक्यों में होता है; जैसे-

- (क) जो गा रहा है, वह मेरा भाई है।
- (ख) जितनी क्षमता हो, उतना ही खर्च करो।
- (ग) जो सच बोलेगा, उसे इनाम मिलेगा।



अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए-

- (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द कहलाते हैं-
विशेषण सर्वनाम
विशेषण और सर्वनाम कोई नहीं
- (ख) 'यह मेरा घर है।' - किस सर्वनाम का उदाहरण है?
निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक
पुरुषवाचक कोई नहीं
- (ग) 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस।' किस सर्वनाम का उदाहरण है?
प्रश्नवाचक निजवाचक
संबंधवाचक कोई नहीं
- (□) 'मैं अपना काम खुद करूँगा।' किस सर्वनाम का उदाहरण है?
निजवाचक उत्तम पुरुषवाचक
अन्य पुरुषवाचक कोई नहीं

2. रिक्त स्थान में उचित सर्वनाम शब्द लिखिए-

- (क) इस दफ्तर में _____ चाचा जी काम करते हैं। (मैं / मेरे)
- (ख) जो पर्ची उठाएगा _____ गाएगा। (उसे / वह)
- (ग) निम्मी ने _____ पुस्तकें दीं। (मुझे / मेरे को)
- (□) अध्यापिका जी ने _____ पढ़ने को कहा। (मैं / हमें)

3. सर्वनाम शब्दों के नीचे रेखा खींचिए-

- (क) हम कल चले जाएँगे।
- (ख) हर काम में वह जल्दबाजी करता है।
- (ग) आज कहीं जाने का मेरा मन नहीं है।
- (□) तुम मेरे जन्मदिन पर अवश्य आना।

4. प्रश्नोत्तर-

(क) सर्वनाम के कितने भेद होते हैं और वे कौन-कौन से हैं? लिखो।

(ख) अनिश्चयवाचक सर्वनाम को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।



क्रियात्मक कौशल

- रंगीन शब्दों के स्थान पर उचित सर्वनामों का प्रयोग करते हुए अनुच्छेद को पुनः लिखिए-

नीलू ने बताया कि **नीलू** की बहन **शीलू** को दिल्ली भेजा गया है। **शीलू** वहाँ हॉस्टल में रहेगी। **शीलू** को वहाँ एक नौकरी मिल गई है। **शीलू** बड़ी मेहनत से काम करेगी। **शीलू** की मेहनत से कमाए हुए रुपयों से **शीलू** बच्चों के लिए एक स्कूल खोलेगी।



विशेषण (Adjective)

संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को **विशेषण** कहते हैं।

जैसे- अच्छा, काला, कंजूस, मीठे, मधुर, रंगीन, हरा, अनगिनत, ठंडी, बुरी आदि।



रमेश तुम **कंजूस** हो। तुम्हारे पास **सौ** रुपये हैं, क्या तुम **एक किलो** आम नहीं खरीद सकते? आम तो फलों का **राजा** है। कितना **मीठा**! कितना **रसीला**! अच्छा; आम न सही जामुन ही खरीद लो। **मीठे** भी हैं। कोई-कोई स्वाद में **कसैला** भी निकल आता है। ये तो **तीस** रुपये में भी आ जाएँगे।

मोहन! चलो, कुछ देर **हरी-मुलायम** घास पर बैठते हैं। **ठंडी** हवा चल रही है। यहाँ, **बड़े-ऊँचे** पेड़ हैं। **रंग-बिरंगे** पक्षियों की **मधुर सुरीली** आवाज़। **थोड़ी** देर बैठो। फिर घर जाकर **विशेषण** के पाठ का अध्ययन करेंगे।

उपर्युक्त वाक्यों में वार्तालाप के मध्य रमेश और मोहन ने अनेक विशेषण शब्द प्रयोग किए हैं।

जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने के लिए किया जाता है, उन्हें **विशेषण** तथा वाक्यों में जिस शब्दों (विषय) की विशेषता बताई जाती है, उन्हें **विशेष्य** कहते हैं।

विशेषण के अधिक ज्ञान के लिए विशेषण के भेदों का ज्ञान करना आवश्यक है। आइए, **विशेषण** के भेदों का ज्ञान करें-

विशेषण के भेद



1. गुणवाचक विशेषण-

जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, स्वभाव, दशा, आकार, रंग आदि के विषय में बताते हैं, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे-



श्रुति के पास नया पेन है।



झलक मोटी हो गई है।



सफेद रंग स्वच्छता का प्रतीक है।



राम महान् थे।

2. संख्यावाचक विशेषण-

जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताते हैं, संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे-



मेज पर दो टोकरियाँ हैं।



मेरा घर चौथी मंजिल पर है।



पाँच मुसंबी देना।



आज कक्षा में दोगुने बच्चे आएँ हैं।

3. परिमाणवाचक विशेषण-

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा, परिमाण (नाप-तौल) आदि का पता चलता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे-



दीनू बीस किलो गेहूँ लाया।



रेशमा ने ढाई मीटर दुपट्टा खरीदा।

4. सार्वनामिक विशेषण-

जो सर्वनाम शब्द विशेषण के रूप में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे-



यह विद्यालय हमारा है।



यह स्वेटर मेरी माँ बुन रही हैं।

विशेषणों की रचना

कुछ विशेषण जैसे- सुख, दुःख, अच्छा, बुरा, मीठा, लंबा मूल रूप से विशेषण होते हैं। किंतु कुछ शब्दों में 'उपसर्ग' व 'प्रत्यय' जोड़कर विशेषणों की रचना की जाती है; जैसे-

अ + खाद्य = अखाद्य (उपसर्ग जोड़ने पर)

दिन + इक = दैनिक (प्रत्यय जोड़ने पर)

(i) संज्ञा से निर्मित विशेषण-

संज्ञा	विशेषण
खर्च	खर्चीला
चाचा	चचेरा

संज्ञा	विशेषण
संयम	संयमी
पक्ष	पाक्षिक

संज्ञा	विशेषण
विवेक	विवेकी
बुद्धि	बुद्धिमान
वन	वन्य
रोग	रोगी
धन	धनी

संज्ञा	विशेषण
इतिहास	ऐतिहासिक
इलाहाबाद	इलाहाबादी
काँटा	कँटीला
घर	घरेलू
स्वभाव	स्वाभाविक

(ii) 'सर्वनाम' से निर्मित विशेषण-

सर्वनाम	विशेषण
मैं	मेरा, मुझसा
तुम	तुमसा
जो	जैसा, जितना

सर्वनाम	विशेषण
कौन	कैसा, कितना
यह	ऐसा, इतना
वह	वैसा, उतना

(iii) 'क्रिया' से निर्मित विशेषण-

क्रिया	विशेषण
खाना	खाऊ
सहना	सहनीय
लड़ना	लड़ाकू
चलना	चलाऊ

क्रिया	विशेषण
कहना	कथित
देखना	दिखावटी
बेचना	बिकाऊ
पीना	पियक्कड़

(iv) अन्य शब्दों से निर्मित विशेषण-

शब्द	विशेषण
पीछे	पिछला
आगे	अगला
बाहर	बाहरी

शब्द	विशेषण
भीतर	भीतरी
ऊपर	ऊपरी
नीचे	निचला

प्रविशेषण

कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं, जो विशेषणों की भी विशेषताएँ बताते हैं। ऐसे पदों को प्रविशेषण कहा जाता है। जैसे-

- कविता बहुत तेज लड़की है।
- मेरे पिता जी अत्यधिक उदार हैं।

यहाँ आए बहुत और अत्यधिक शब्द प्रविशेषण हैं।

विशेषणों की अवस्थाएँ

(i) मूलावस्था-

जब विशेषणों की तुलना नहीं होती, अपितु वह अपने मूलरूप में प्रयोग किए जाते हैं तो वे अपनी मूलावस्था में होते हैं; जैसे-

रोहित अच्छा है।

(ii) उत्तरावस्था-

विशेषण का वह रूप जिसके द्वारा दो विशेष्यों की तुलना की जाए, उसे विशेषण की उत्तरावस्था कहते हैं; जैसे-रोहित संदीप से बेहतर है।

(iii) उत्तमावस्था-

यह विशेषण का वह रूप है जब तीन या तीन से अधिक के बीच किसी विशेष्य को सबसे बढ़कर बताया जाता है; जैसे-रोहित सर्वोत्तम है।

यहाँ विशेषणों की अवस्थाएँ दी गई हैं, पढ़कर उन्हें समझिए-

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
कटु	कटुतर	कटुतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
स्पष्ट	स्पष्टतर	स्पष्टतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
विशाल	विशालतर	विशालतम
दृढ़	दृढ़तर	दृढ़तम
लघु	लघुतर	लघुतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
निकट	निकटतर	निकटतम
मृदु	मृदुतर	मृदुतम
गहन	गहनतर	गहनतम

मूलावस्था

उत्तरावस्था

उत्तमावस्था

महान

महानतर

महानतम

निम्न

महत्तर

महत्तम

श्रेष्ठ

निम्नतर

निम्नतम

मोटा

श्रेष्ठतर

श्रेष्ठतम

चतुर

अधिक मोटा

सबसे अधिक मोटा

अधिक चतुर

सबसे अधिक चतुर

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए-

(क) संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्द कहलाते हैं-

विशेषण

विशेष्य

प्रविशेषण

कोई नहीं

(ख) विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द कहलाते हैं-

विशेषण

विशेष्य

प्रविशेषण

कोई नहीं

(ग) जिन शब्दों की विशेषता बताई जाए, वे कहलाते हैं-

विशेषण

विशेष्य

प्रविशेषण

कोई नहीं

2. विशेषण को उचित विशेष्य से मिलाइए-

विशेषण

विशेष्य

कर्कश

किरण

सुनहरी

रज़ाई

गुनगुनी

रात

काली

आवाज़

गरम

धूप

3. रिक्त स्थानों में उचित विशेषण भरिए-

(क) सुदामा, श्रीकृष्ण के _____ मित्र थे। (प्रिय / दुष्ट)

- (ख) कश्मीर में चिनार के _____ वृक्ष हैं। (विशाल / छोटे)
 (ग) थलसेना के जवानों की वर्दी _____ होती है। (सफ़ेद / हरी)
 (घ) बाज़ार से _____ लीटर दूध ले जाओ। (दो / सफ़ेद)
 (ङ) रुही _____ लड़की है। (नटखट / काली)

4. इन विशेषणों के लिए विशेष्य लिखिए-

ऊँचा	_____	ताज़ा	_____
लंबा	_____	नया	_____
खट्टा	_____	पुराना	_____
मीठा	_____	पहला	_____
रसीला	_____	अंतिम	_____

5. स्पष्ट कीजिए-

(क) संख्यावाचक विशेषण-

(ख) गुणवाचक विशेषण-



क्रियात्मक कौशल

• इन विशेषणों की उत्तमावस्था लिखिए-

श्रेष्ठ	_____	मधुर	_____
कटु	_____	उच्च	_____

• अपने मित्रों के लिए एक-एक विशेषण का प्रयोग करते हुए वाक्य लिखिए; जैसे-

- (क) _____ हँसमुख : _____ मेरा मित्र आलोक हँसमुख है।
 (ख) _____ : _____
 (ग) _____ : _____
 (घ) _____ : _____



क्रिया (Verb)

जिन शब्दों से किसी काम का करना या होना पाया जाए, उन्हें क्रिया कहते हैं।

‘क्रिया’ का अर्थ है ‘किसी कार्य को करना।’ अर्थात् क्रिया किसी कार्य को करने की एक प्रगति है जो हमें कार्य के होने के बारे में जानकारी देती है। जैसे- मैं सुबह अस्पताल जा रही हूँ। अर्थात् जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता है, वे क्रिया शब्द कहलाते हैं।

करना, सजाना, बनाना, लिखना, दौड़ना, जाना, सोना, पढ़ना, खाना, पकाना, देना, कूदना, उठना, सोना, बोना, उखाड़ना, उठाना आदि सभी क्रिया शब्द हैं, जिनसे किसी कार्य के होने का पता चलता है। नीचे लिखे वाक्य ऐसे वाक्य हैं, जिनसे किसी कार्य के होने का पता चलता है-



1. आज एक अजीब-सी घटना हुई।



2. बच्चे कक्षा के बाहर खेल रहे थे।



3. मैं देर तक खड़ी रही।



4. वह झटपट तैयार हो गई।

उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन शब्द क्रिया शब्द हैं, जिनसे किसी कार्य के होने का पता चल रहा है।

धातु

क्रियाओं के सामान्य रूप, जैसे-खाना, दौड़ना, पढ़ना आदि में से ‘ना’ निकाल देने पर जो रूप रह जाता है, उसे मूल धातु कहते हैं; जैसे-खा, दौड़, पढ़ आदि।

क्रिया के अधिक ज्ञान के लिए हमें क्रिया के भेदों का ज्ञान होना आवश्यक है।

क्रिया के भेद

क्रिया के दो भेद होते हैं-

1. सकर्मक क्रिया

2. अकर्मक क्रिया

1. सकर्मक क्रिया-



वाक्य में जब क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग होता है तो वह सकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे-

कौआ पानी पीता है।

हाथी केले खाता है।



ऊपर दिए गए वाक्यों में पीता है, खाता है सकर्मक क्रियाएँ हैं क्योंकि इनके कर्म पानी और केले दिए गए हैं।

क्रिया में क्या, किसे व किसको शब्द लगाकर प्रश्न करने से यह पता लग जाता है कि उसके साथ कर्म दिया गया है या नहीं। यदि कर्म दिया होता है, तो वह सकर्मक क्रिया होती है; जैसे-

(क) कौआ क्या पीता है ? उत्तर-पानी

(ख) हाथी क्या खाता है ? उत्तर-केले

इन उत्तरों से कर्म का पता चलता है, अतः ये सकर्मक क्रियाएँ कहलाएँगी।

2. अकर्मक क्रिया-



जिस क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग नहीं होता, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे-

(क) शेखर हँसता है।

(ख) निधि खाती है।

इन वाक्यों के प्रश्न बनाने पर कोई उत्तर नहीं मिलता-

(क) शेखर क्या देखकर हँसता है ? (पता नहीं)

(ख) निधि क्या खाती है ? (पता नहीं)

इन वाक्यों में कर्म नहीं है, अतः ये अकर्मक क्रियाएँ हैं।



अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए-

(क) वह शब्द जिससे किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध हो, उसे कहते हैं-

कर्म

क्रिया

क्रियाविशेषण

कोई नहीं

(ख) क्रिया के भेद हैं-

सकर्मक क्रिया

अकर्मक क्रिया

दोनों

कोई नहीं

(ग) 'राम खाना खाता है' में कौन-सी क्रिया है?

सकर्मक

अकर्मक

द्विकर्मक

कोई नहीं

2. सुमेल कीजिए-

भाषण	लिखना
पत्र	बोलना
सच	पकाना
सब्जी	देना
गीत	करना
नृत्य	गाना

3. उदाहरण देखकर मूलधातु से नए शब्द बनाइए-

चल	-	चलना	चलता	चलेगा
लिख	-	_____	_____	_____
पढ़	-	_____	_____	_____
रो	-	_____	_____	_____
हँस	-	_____	_____	_____



4. क्रियापदों को शुद्ध करके वाक्य पुनः लिखिए-

(क) शुभ्रा पत्र लिखेगा।

(ख) भीड़ जमा हो गया।

(ग) तुम कहाँ रहेगा?

(घ) जलेबी ठंडा हो गया।

5. स्पष्ट कीजिए-

सकर्मक क्रिया-

अकर्मक क्रिया-



क्रियात्मक कौशल

• सही स्थान पर लिखिए-

(क) बकरी चरती है।

(ख) चाचा जी आए।

(ग) आशिमा ने कंबल ओढ़ लिया।

(घ) सोमेश ने पत्र लिखा।

(ङ) आभा रो पड़ी।

(च) माँ ने तवे पर पराँठा बनाया।

सकर्मक क्रियाएँ	अकर्मक क्रियाएँ
_____	_____
_____	_____
_____	_____



क्रिया, काल और वाच्य

(Verb, Tense and Voice)

क्रिया के अभाव में वाक्य की रचना नहीं हो सकती।

निम्न को देखिए-



पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं।



मछलियाँ तालाब में हैं।



बच्चा साइकिल से गिर गया।

उपयुक्त वाक्यों में क्रिया (कार्य) का होना रंगीन पदों द्वारा बताया गया है।

जैसे- 'उड़ रहे हैं' → 'कार्य का होना' पता चल रहा है।
 हैं → 'अस्तित्व' का पता चल रहा है।
 'गिर गया' → 'घटना' घटित होने का पता चल रहा है।

हिंदी में इस प्रकार के शब्दों को 'क्रिया' कहा जाता है।

धातु

क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। किसी धातु से ही क्रिया के विविध रूपों का निर्माण होता है।

धातु से क्रिया की रचना

धातु	क्रिया	धातु	क्रिया	धातु	क्रिया
पढ़	पढ़ना	चल	चलना	खा	खाना
पी	पीना	आ	आना	जा	जाना
सुन	सुनना	लिख	लिखना	बैठ	बैठना

क्रिया के भेद

क्रिया के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं-

(क) कर्म के आधार पर (ख) संरचना के आधार पर

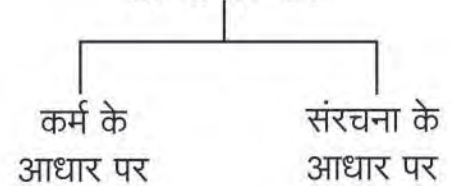
(क) कर्म के आधार पर क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं-

1. अकर्मक क्रिया-

जिन वाक्यों में कर्त्ता के साथ कर्म का प्रयोग नहीं किया जाता तथा क्रिया का फल कर्त्ता पर ही पड़ता है, ऐसे वाक्यों की क्रियाएँ **अकर्मक क्रियाएँ** कहलाती हैं। जैसे-

क्रिया के भेद



• शेर दहाड़ता है।

• बच्चा भागता है।

• बंदर कूदता है।

इन वाक्यों में क्रियाओं 'दहाड़ता है', 'भागता है' और 'कूदता है' का फल क्रमशः 'शेर', 'बच्चे' और 'बंदर' पर ही पड़ रहा है अतः ये **अकर्मक क्रियाएँ** हैं।

2. सकर्मक क्रिया-

वाक्यों में जिन क्रियाओं के साथ कर्म होता है तथा क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, ऐसी क्रियाओं को **सकर्मक क्रियाएँ** कहा जाता है। जैसे-

• रानी पानी पीती है।

• भीम ने गदा चलाई।

• कपिल गाना सुनाता है।

इन वाक्यों में 'पीती है' क्रिया का फल 'पानी' (कर्म) पर, 'चलाई' क्रिया का फल 'गदा' (कर्म) पर, और 'सुनाता है' क्रिया का फल 'गाना' (कर्म) पर पड़ रहा है। अतः ये क्रियाएँ '**सकर्मक क्रियाएँ**' हैं।

विशेष : सकर्मक क्रिया को करने वाला कर्त्ता होता है। परंतु उसके कार्य का फल कर्म पर पड़ता है।

सहायक क्रियाएँ

वाक्य में प्रयोग करते समय कुछ सहायक क्रियाओं को मुख्य क्रिया के साथ रखा जाता है। जैसे-

• बालक दौड़ रहा था।

मुख्य क्रिया - दौड़ना

सहायक क्रिया - था

सामान्यतः 'है, हैं, हूँ, था, थी' आदि सहायक क्रियाएँ हैं। परंतु वाक्य में मुख्य क्रिया के अभाव में ये ही मुख्य क्रिया का कार्य करती हैं। जैसे-

• वे हँसते हैं।

• वे हॉल में हैं।

• वह खेल रहा है।

• वह प्रसन्न है।

(ख) संरचना के आधार पर क्रिया के भेद

संरचना की दृष्टि से क्रिया को पाँच भेदों में बाँटा जाता है :

1. संयुक्त क्रिया-

जिन वाक्यों में एक से धातुओं से बने क्रियापद होते हैं, वहाँ **संयुक्त क्रिया** होती है। जैसे-

• रवि अपने घर चला गया। (चला + गया)

• लेखक लेख लिखने लगा। (लिखने + लगा)

2. प्रेरणार्थक क्रिया-

जिन क्रियाओं में कर्त्ता द्वारा स्वयं कार्य न करके किसी और से करवाया जाता है, ऐसी क्रियाओं को **प्रेरणार्थक क्रिया** कहते हैं। जैसे-

• विकास ने कमल से पानी मँगवाया।

• माता जी ने सीमा से पत्र पढ़वाया।

3. पूर्वकालिक क्रिया-

वाक्य में मुख्य क्रिया से पहले होने वाली क्रिया को **पूर्वकालिक क्रिया** कहते हैं; जैसे-

• अमर खड़े होकर पढ़ रहा है।

• श्यामा पढ़कर आ गई है।

4. नामधातु क्रिया-

धातु के अतिरिक्त संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण से बनने वाले क्रियापद नामधातु क्रिया कहलाते हैं; जैसे-

संज्ञा शब्दों से - शर्म → शर्माना हाथ → हथियाना फिल्म → फिल्माना

सर्वनाम शब्दों से - अपना → अपनाना

विशेषण शब्दों से - दोहरा → दोहराना

5. विधिसूचक क्रिया-

क्रिया का जो रूप विधि (आज्ञा, प्रार्थना, सलाह, उपदेश, अनुरोध आदि) का बोध कराता है, उसे विधिसूचक क्रिया कहते हैं; जैसे-

- पंकज, दरवाजा खोलो। (आज्ञा)
- हमेशा बाईं ओर चलें। (सलाह)

- कृपया, धीरे चलें। (प्रार्थना)
- जानवरों को न सताएँ। (उपदेश)

काल



सुलेखा कल बीमार थी।



सुलेखा आज स्वस्थ है।



सुलेखा कल विद्यालय जाएगी।

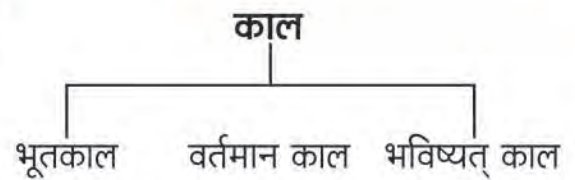
उपर्युक्त तीनों वाक्य क्रिया के होने के अलग-अलग समय का बोध करा रहे हैं। प्रथम वाक्य से बीते हुए समय का, द्वितीय वाक्य से वर्तमान समय का और तृतीय वाक्य से आने वाले समय का पता चल रहा है। व्याकरण में इसे काल कहते हैं।

क्रिया के जिस रूप से कार्य के करने या होने के समय का बोध होता है, वह काल कहलाता है।

काल के भेद

काल के तीन भेदों में बाँटा जाता है-

(1) भूतकाल (2) वर्तमान काल (3) भविष्यत् काल



1. भूतकाल

क्रिया का जो रूप उसके बीते हुए समय में होने का बोध कराता है, वह भूतकाल की क्रिया कहलाती है। उस रूप को भूतकाल कहा जाता है; जैसे-

- डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।
- पिता जी कार्यालय जा चुके थे।

ये क्रियाएँ बीते हुए समय का बोध करा रही हैं, अतः ये 'भूतकाल की क्रियाएँ' हैं।

भूतकाल के भेद : भूतकाल के छह भेद होते हैं-

(क) सामान्य भूत काल : भूतकाल की क्रिया का साधारण रूप सामान्य भूत काल कहलाता है: जैसे-

- मैंने माताजी को पत्र लिखा।
- मामा जी ने हमें खिलौना दिलाया।

(ख) आसन्न भूत काल : क्रिया का जो रूप हमें यह बताता है कि क्रिया अभी समाप्त हुई है, उसे आसन्न भूत काल कहा जाता है; जैसे-

- मैंने पत्र लिख लिया है।
- मनोज अभी गया है।

(ग) अपूर्ण भूत काल : क्रिया के जिस रूप से यह तो पता चले कि क्रिया भूतकाल में हुई थी, परंतु उसकी समाप्ति के विषय में कुछ भी पता न चले तो ऐसी क्रिया को अपूर्ण भूत काल कहते हैं; जैसे-

- मीरा भजन गा रही थी।
- वर्षा हो रही थी।

(घ) पूर्ण भूत काल : क्रिया के जिस रूप से पता चले कि क्रिया भूतकाल में पूर्ण हो गई थी, उसे पूर्ण भूत कहते हैं; जैसे-

- बस जा चुकी थी।
- विद्यालय बंद हो गया था।

(ङ) संदिग्ध भूत काल : क्रिया का जो रूप भूतकाल का बोध कराए, परंतु कार्य के विषय में संदेह उत्पन्न करे, उसे वहाँ संदिग्ध भूत काल होता है; जैसे-

- यदि वर्षा होती तो फसल न सूखती।
- यदि वह पढ़ लेता तो अवश्य प्रथम आता।

2. वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से पता चले कि क्रिया अभी हो रही है या की जा रही है तो उसे वर्तमान काल की क्रिया कहते हैं; जैसे-

- शेर दहाड़ता है।
- बालक पढ़ रहे हैं।

वर्तमान काल के भेद : वर्तमान काल के तीन भेद होते हैं-

(क) सामान्य वर्तमान काल : क्रिया का जो रूप कार्य का वर्तमान समय में होने का सामान्य रूप से बोध कराए उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं; जैसे-

- महिमा खेलती है।
- माता जी भजन गाती हैं।

(ख) अपूर्ण वर्तमान काल : क्रिया का जो रूप यह बताए कि कार्य वर्तमान समय में चल रहा है उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहा जाता है; जैसे-

- चिड़िया उड़ रही है।
- पिता जी चाय पी रहे हैं।

(ग) संदिग्ध वर्तमान काल : क्रिया का जो रूप कार्य के वर्तमान समय में होने के विषय में संदेह व्यक्त करे, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं; जैसे-

- चिड़िया उड़ रही होगी।
- पिता जी चाय पी रहे होंगे।

3. भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से कार्य के आने वाले समय में होने का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे-

- विद्यालय नौ बजे खुलेगा।
- मैं खेलने जाऊँगा।

भविष्यत् काल के भेद : भविष्यत् काल के दो भेद होते हैं-

(क) सामान्य भविष्यत् काल : क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में क्रिया का सामान्य रूप से होना पाया जाए, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे-

- पिता जी किताबें लाएँगे।
- हम शाम को मेले में जाएँगे।

(ख) संभाव्य भविष्यत् काल : जब आने वाले समय में क्रिया के होने या न होने के विषय में संभावना व्यक्त की जाए, तब संभाव्य भविष्यत् काल होता है; जैसे-

- इस वर्ष शायद वह उत्तीर्ण हो जाए।
- संभव है कल वर्षा हो।

वाच्य

पढ़िए और समझिए-

(क)

- कुत्ता सो रहा है।
- बच्चा खेलता है।
- करण ने चाय पी।

(ख)

- कुत्ते से/के द्वारा सोया जा रहा है।
- बच्चे से खेला जाता है।
- करण से/के द्वारा चाय पी गई।

यहाँ (क) वर्ग के तीनों वाक्यों में क्रियाओं के वचन और लिंग 'कर्त्ता' के अनुसार हैं जबकि (ख) वर्ग में पहले और दूसरे वाक्य में भाव की और तीसरे में कर्म की प्रधानता है।

हिंदी व्याकरण में क्रिया का ऐसा रूपांतर जिससे ज्ञात हो कि क्रिया का विषय कर्त्ता है, कर्म अथवा भाव है, वाच्य कहलाता है।

क्रिया का वह रूप जिससे यह जाना जाए कि क्रिया के व्यवहार का प्रधान विषय कर्त्ता है, कर्म है अथवा भाव है, वाच्य कहलाता है।

वाच्य के भेद

परिभाषा के आधार पर हम वाच्य को तीनों रूपों में बाँट सकते हैं-

(क) कर्तृवाच्य

(ख) कर्मवाच्य

(ग) भाववाच्य

(क) कर्तृवाच्य : इसमें क्रिया का संबंध कर्त्ता से होता है। क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष का आधार कर्त्ता का लिंग, वचन और पुरुष होता है; जैसे-

- दादा जी घूमने जाते हैं।
- तोता मिर्च खाता है।

(ख) कर्मवाच्य : क्रिया का जो रूप बताए कि वाच्य का उद्देश्य कर्त्ता न होकर कर्म है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। केवल 'को' विभक्ति वाली सकर्मक क्रियाएँ ही कर्मवाच्य में प्रयुक्त हो सकती हैं; जैसे-

- हरि से पत्र लिखा जाता है।
- राधा के द्वारा नाचा जा रहा है।

(ग) भाववाच्य : क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो की वाक्य में कर्त्ता और कर्म की प्रधानता के स्थान पर भाव की प्रधानता है, उसे भाववाच्य कहते हैं; जैसे-

- अब उठा जाए।
- मोहन से चला भी नहीं जाता।

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) क्रिया किसे कहते हैं?

(ख) धातु क्या होती है?

(ग) काल के भेद बताइए।

(घ) काल की परिभाषा दीजिए।

अकर्मक

सकर्मक

_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

2. निम्नलिखित वाक्यों में अकर्मक और सकर्मक क्रियाएँ छाँटिए-

(क) शेर दहाड़ता है।

(ख) मोहन पानी लाया।

(ग) वह सोता है।

(घ) हम कहानी लिखते हैं।

क्रिया

काल

_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

3. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया तथा उसका काल लिखिए-

(क) बच्चा खेलता है।

(ख) वह कश्मीर जाएगा।

(ग) हमने मेला देख लिया था।

(घ) गायक गाना गा रहा है।

4. निम्नलिखित वाक्यों का निर्देशानुसार काल परिवर्तन कीजिए-

(क) मनीष खेलता है। (संभाव्य भविष्यत् काल)

(ख) गीता सो रही थी। (संदिग्ध भूत काल)

(ग) अशोक ने खाना खाया। (अपूर्ण भूत काल)

(घ) बच्चे गाना गाते हैं। (अपूर्ण भूत काल)

5. निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य लिखिए-

(क) मुझसे चला नहीं जाता।

(ख) किसान खेत जोतता है।

(ग) माली पौधे लगाएगा।

(घ) बच्चा हँसता है।



11

विराम-चिह्न (Punctuation)

विराम का अर्थ है-‘रुकना या ठहरना’। लिखते समय विराम-चिह्नों का प्रयोग आवश्यक है। कभी किसी कथन पर बल देने और कभी बात को स्पष्ट करने के उद्देश्य से हम विराम-चिह्नों का उपयोग करते हैं। लिखते समय रुकने को दर्शाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

हिंदी भाषा में बहुत-से विराम-चिह्न प्रयोग किए जाते हैं, उनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं-

- | | |
|--|--------------|
| 1. पूर्णविराम (Full Stop) | (.) |
| 2. अल्पविराम (Comma) | (,) |
| 3. अर्धविराम (Semi-colon) | (;) |
| 4. प्रश्नसूचक-चिह्न (Mark of Interrogation) | (?) |
| 5. विस्मयादिसूचक-चिह्न (Mark of Exclamation) | (!) |
| 6. निर्देशक-चिह्न (Dash) | (-) |
| 7. उद्धरण-चिह्न (Inverted Commas) | ("..."'...') |
| 8. योजक-चिह्न (Hyphen) | (-) |
| 9. कोष्ठक (Brackets) | () |
| 10. विस्मृत-चिह्न (Left Mark) | (^) |

1. पूर्णविराम (.) – वाक्य के अंत में प्रायः पूर्णविराम लगाया जाता है;

जैसे- मैं चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ।

वह खाना खा चुका है।

2. अल्पविराम (,) – किसी वाक्य में जहाँ थोड़ा रुकना होता है अथवा दो या दो से अधिक शब्दों या वाक्यों आदि को अलग-अलग करना होता है, वहाँ अल्पविराम लगाया जाता है।

जैसे- (क) बालको, शोर मत करो।

(ख) पूजा, प्रिया और सुमन बगीचे में बैठी हैं।

□अर्धविराम□- वाक्य में जहाँ पूर्णविराम से कम किंतु अल्पविराम से अधिक रुकने की आवश्यकता हो, वहाँ अर्धविराम का प्रयोग होता है; जैसे- आपको शादी पर जाना है, जाओ; हम थोड़ा रुककर जाएँगे।

4. प्रश्नसूचक-चिह्न (?) – जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा जाता है, उसके अंत में यह चिह्न लगाया जाता है; जैसे- (क) क्या आप मेरे साथ चलेंगे?

(ख) आप कहाँ घूमने जा रहे हो?

5. विस्मयादिसूचक-चिह्न ! – जिन वाक्यों में हर्ष, घृणा, शोक, उत्साह, आनंद आदि भावों का बोध होता है, वहाँ विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे-

(क) अरे ! आप कब आए?

(ख) हाय ! बेचारा छोटी उम्र में ही चल बसा।

6. निर्देशक-चिह्न (-) – यदि किसी बात का उदाहरण आगे दिया जाता हो, तो निर्देशक-चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे- (क) पूनम ने कहा- “मुझे आगरा जाना है।”

(ख) माता जी ने रवि से कहा- “लोभ पाप का कारण है।”

7. उद्धरण-चिह्न (“...”) – जब कहने वाले के कथन को ज्यों-का-त्यों उसी के शब्दों में प्रयोग करना होता है, तब उद्धरण-चिह्न का प्रयोग करते हैं। किसी पुस्तक या समाचार-पत्र आदि के नाम को इकहरे उद्धरण चिह्न में लिखते हैं, जैसे-

(क) किरण ने काजल से कहा- “मैं बड़ी होकर विदेश जाना चाहती हूँ।”

(ख) तुलसीदास जी ने ‘रामचरितमानस’ ग्रंथ लिखा था।

8. योजक-चिह्न (-) – यह एक छोटी-सी रेखा है जिसका उपयोग दो शब्दों को जोड़ने के लिए होता है; जैसे- (क) मेरे माता-पिता कल आगरा से लौटे हैं।

(ख) हमें हँसते-मुस्कुराते हुए जीना चाहिए।

9. कोष्ठक (()) – कोष्ठक के भीतर ऐसा शब्द या वाक्य रखा जाता है जो मुख्य वाक्य का अंग नहीं होता। किसी शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे-

(क) शौर्य (पुनीत का भाई) कल हवाई जहाज से लौटा था।

(ख) हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री (जवाहरलाल नेहरू) हमारे लिए आदरणीय हैं।

□□विस्म□□।-चिह्न□) वाक्य लिखते समय यदि भूल से कोई शब्द बीच में छूट जाता है, तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जैसे-

उसे
यह पुरस्कार [^] दे दो।

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए-

(क) विराम का शाब्दिक अर्थ क्या है?

जाना

रुकना

अभिव्यक्ति

भाव

(ख) निम्नलिखित चिह्नों में अर्द्धविराम का चिह्न है-

(:)

(!)

(;)

(^)

(ग) 'भाई-बहन' में कौन-सा विराम चिह्न है?

विवरण-चिह्न

निर्देशक-चिह्न

योजक-चिह्न

उद्धरण-चिह्न

2. दिए गए चिह्नों के आगे उनके नाम लिखिए-

?

;

-

' _____

"... " _____

3. इनके लिए जो चिह्न प्रयुक्त होते हैं, वे चिह्न बनाइए-

कोष्ठक

-

उद्धरण-चिह्न

-

विस्मयादिसूचक-चिह्न

-

प्रश्नसूचक-चिह्न

-



क्रियात्मक कौशल

• आगे दिए गए अनुच्छेद में जहाँ जो चिह्न लगाना चाहिए, लगाइए-

मधु नीना व पूजा सहेलियाँ हैं एक दिन मधु ने कहा चलो हम मिलकर कोई नया काम करें नया काम कैसा पूजा ने हैरानी से पूछा नए से मतलब है कि एक दिन के लिए हम अध्यापिका जी का अभिनय करते हुए बच्चों को पढ़ाएँ मधु ने बताया



12

शब्द भंडार

(Vocabulary)

तत्सम-तद्भव

हिंदी भाषा में संस्कृत के बहुत-से शब्दों का हम आज भी प्रयोग करते हैं। ऐसे ही शब्द तत्सम शब्द कहलाते हैं।

संस्कृत भाषा के वे शब्द जो अपने मूल रूप में परिवर्तन के साथ हिंदी में प्रयुक्त होते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं। आइए, कुछ ऐसे ही शब्द जानें-

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अग्नि	- आग	पादप	- पौधा	काक	- कौआ
सूर्य	- सूरज	पत्र	- पत्ता	चटका	- चिड़िया
चंद्र	- चाँद	आक्षि	- आँख	उलूक	- उल्लू
चंद्रिका	- चाँदनी	हस्त	- हाथ	मयूर	- मोर
रात्रि	- रात	कोकिल	- कोयल	कंदुक	- गेंद
स्वर्ण	- सोना	कदली	- केला	कपोत	- कबूतर
दुग्ध	- दूध	मक्षिका	- मक्खी	गोपाल	- ग्वाला
ग्राम	- गाँव	दधि	- दही	घोटक	- घोड़ा
गृह	- घर	क्षीर	- खीर	शिर	- सिर
हास्य	- हँसी	चणक	- चना	मस्तक	- माथा
रुदन	- रोना	घृत	- घी	नयन	- नैन
अमूल्य	- अमोल	मिष्ट	- मीठा	नासिका	- नाक
नृत्य	- नाच	शाक	- साग	मुख	- मुँह

विलोम शब्द

एक-दूसरे के विपरीत या उल्टे अर्थ बताने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

नी
स र स
स

र सी ला
स
ही
न

लि
मौ खि क
त

आइए कुछ अन्य विलोम शब्द पढ़ें-

अंधकार	×	प्रकाश
अमृत	×	विष
अस्त	×	उदय
आलसी	×	परिश्रमी
ईमानदार	×	बेईमान
उत्तरी	×	दक्षिणी
उधार	×	नकद
उपस्थित	×	अनुपस्थित
उत्तीर्ण	×	अनुत्तीर्ण
कपूत	×	सपूत
कृपण	×	दानी
क्रय	×	विक्रय
क्रोध	×	क्षमा
गुण	×	अवगुण
जड़	×	चेतन
जन्म	×	मृत्यु
जय	×	पराजय

जीवन	×	मरण
ज्ञान	×	अज्ञान
तरल	×	ठोस
ताप	×	शीत
दयालु	×	कठोर
दूषित	×	स्वच्छ
धीर	×	अधीर
निंदा	×	प्रशंसा
नीरस	×	सरस
पक्ष	×	विपक्ष
पाप	×	पुण्य
पुरस्कार	×	दंड
प्रथम	×	अंतिम
प्रेम	×	घृणा
बलवान	×	बलहीन
भूत	×	भविष्य
मूर्च्छित	×	सचेत

मृत	×	जीवित
लापरवाह	×	सावधान
लिखित	×	मौखिक
यश	×	अपयश
युद्ध	×	शांति
युवा	×	वृद्ध
रक्षक	×	भक्षक
विशाल	×	लघु
विशिष्ट	×	सामान्य
शुष्क	×	सरस
श्वेत	×	श्याम
सज्जन	×	दुर्जन
समान	×	असमान
सुगंध	×	दुर्गंध
सुसंग	×	कुसंग
स्वच्छ	×	मलिन
स्वतंत्र	×	परतंत्र

पर्यायवाची शब्द

समान अर्थ बताने वाले शब्द समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करते समय बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है; जैसे- जल के पर्याय हैं- पानी, तोय, वारि, अंबु।

आसमान से **पानी** बरस रहा है।

यहाँ हम पानी की जगह वारि, तोय या अंबु नहीं लिख सकते। इस प्रकार-

झोंपड़ी में **आग** लग गई।

यहाँ आग की जगह अग्नि, हुताशन, पावक शब्दों का प्रयोग नहीं हो सकता।

आइए, कुछ पर्यायवाची शब्द पढ़ें-

अग्नि	- अनल, पावक, आग
आकाश	- गगन, अंबर, आसमान
जल	- नीर, वारि, पानी
धरती	- धरा, पृथ्वी, वसुंधरा
वायु	- अनिल, समीर, हवा
वन	- जंगल, अरण्य, कानन
उपवन	- बाग, बगीचा, फुलवारी
पक्षी	- खग, विहग, नभचर
पुष्प	- फूल, कुसुम, प्रसून
भौरा	- मधुप, षट्पद, भ्रमर
कमल	- पंकज, नीरज, जलज
हिमालय	- गिरिराज, हिममुकुट, नगराज
पर्वत	- गिरि, शैल, भूमर
नदी	- सलिला, तटिनी, तरंगिनी
तालाब	- जलाशय, तड़ाग, सरोवर
दिन	- दिवा, दिवस, वार
रात	- रजनी, निशा, यामिनी
सुबह	- भोर, प्रातः, उषा

सूर्य	- दिवाकर, भानु, सूरज
चाँद	- चंद्रमा, शशि, मयंक
बादल	- जलद, वारिद, मेघ
वर्षा	- मेह, बारिश, वृष्टि
कृषक	- किसान, खेतिहर, हलधर
घोड़ा	- हय, बाजि, तुरंग
सिंह	- शेर, वनराज, केसरी
साँप	- सर्प, अहि, व्याल
मानव	- नर, आदमी, मनुष्य
दानव	- असुर, राक्षस, दैत्य
प्रार्थना	- अर्चना, उपासना, विनती
विद्यालय	- पाठशाला, मदरसा, स्कूल
घर	- सदन, आलय, गृह
अच्छा	- सुंदर, शोभायमान, बढ़िया
दूध	- पय, अमृत, दुग्ध
झंडा	- ध्वज, केतु, निशान
स्वर्ण	- सोना, कंचन, हेम
इच्छा	- आकांक्षा, अभिलाषा, कामना

अनेकार्थी शब्द

ऐसे शब्द, जिनके दो या अधिक (अनेक) अलग-अलग अर्थ हों, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

आइए, कुछ अनेकार्थी शब्दों को जानें-

अंक	→ 1, 2, 3, 4 नंबर	- परीक्षा में तुम्हारे कितने अंक आए?
	→ गोद	- रोते हुए बालक को माँ ने अपने अंक में ले लिया।

अंबर	→ आसमान	- अंबर में अनगिनत तारे हैं।
	→ वस्त्र	- कृष्ण ने पीतांबर पहना है।

उत्तर

→ दिशा
→ प्रश्न का उत्तर

- उत्तर दिशा में जाओ, वहाँ तुम्हें एक महल मिलेगा।
- तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देना कठिन है।

कर

→ हाथ
→ टैक्स

- इस विद्यालय की नींव गांधी जी के करों द्वारा रखी गई।
- हर व्यक्ति अपने वेतन में से कर जमा करता है।

कल

→ आने वाला दिन
→ मशीन

- कल मैं मेला देखने जाऊँगी।
- हमारे शहर के बाहरी हिस्से में एक कल-कारखाना लगाया गया था।

काल

→ समय
→ मृत्यु

- प्रातःकाल उठकर सैर करना मेरी आदत है।
- काल किसी को नहीं छोड़ता।

कुल

→ जमा/जोड़
→ वंश

- मेरे पास कुल सौ रुपये हैं।
- मैं अपने कुल का नाम रोशन करूँगी।

गंदा

→ मैला
→ खराब

- वर्षा के कारण पानी गंदा हो गया।
- गंदी बातें मत करो।
- तुम्हारा व्यवहार गंदा है।

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

बच्चो! ये शब्द भी बड़े जादूगर होते हैं। हमारी भाषा में अनेक शब्द ऐसे हैं जिनकी वर्तनी और अर्थ तो अलग हैं पर सुनने में ये एक जैसे ही लगते हैं।

इन शब्दों का शुद्ध उच्चारण न करने पर हम न तो इन्हें सही लिख सकते हैं और न ही अर्थ में भेद कर सकते हैं। श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों को हम अपने पाठों में खूब पाते हैं और दैनिक जीवन में भी इनका प्रयोग खूब करते हैं परंतु इन्हें पहचान नहीं पाते।

आइए, ऐसे शब्दों को पढ़ें, समझें और प्रयोग करें-

अनल	-	अग्नि
अनिल	-	वायु
अमूल	-	जिसकी जड़ न हो
अमूल्य	-	जिसका मूल्य न हो
अवधि	-	समय, काल
अवधी	-	एक भाषा
उतर	-	उतरन
उत्तर	-	जवाब
ओर	-	तरफ
और	-	तथा
कंकाल	-	ढाँचा
कंगाल	-	निर्धन
कुल	-	जोड़/जमा
कूल	-	किनारा
कोश	-	शब्दों का कोश
कोष	-	खजाना

गूँथना	-	चोटी गूँथना, माला गूँथना
गूँदना	-	आटा गूँदना
चित	-	गिरना, नीचे पटकना
चित्त	-	मन
नीरद	-	बादल (द-लाने वाला)
नीरज	-	कमल (ज-पैदा होने वाला)
पानी	-	पेय पदार्थ
पाणि	-	हाथ
प्रमाण	-	साक्ष्य
प्रणाम	-	नमस्कार
बहु	-	बहुत
बहू	-	वधू
मांस	-	मीट
मास	-	महीना
सर	-	ताल
शर	-	बाण

इ/ढ़ के प्रयोग में सावधानी बरतें-

कड़ी	-	जंजीर
कढ़ी	-	एक व्यंजन
पड़ना	-	गिरना
पढ़ना	-	पाठ पढ़ना/वाचन करना

कड़ाई	-	सख्ती
कढ़ाई	-	कपड़े पर फूल पत्ती काढ़ना
कढ़ाही	-	एक बरतन

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

अनेक शब्दों के स्थान पर यदि हम एक शब्द का प्रयोग करें, तो भाषा अच्छी और प्रभावशाली बन जाती है।

यदि अधिक-से-अधिक बात को कम शब्दों में कहा जाए, तो कहने वाला प्रशंसा का पात्र बनता है। भाषा पर उसकी पकड़, उसका ज्ञान निखरता जाता है।

पानी में रहने वाले जीव - जलचर पृथ्वी पर रहने वाले जीव - थलचर
आकाश में उड़ने वाले जीव - नभचर मिट्टी के बरतन बनाने वाला - कुम्हार

हम भी अपने भाषा-ज्ञान को बढ़ाएँ और शब्द सीखें-

नीचे लिखा हुआ	निम्नलिखित	अधिक बोलने वाला	वाचाल
जिनके नीचे रेखा खिंची हुई हो	रेखांकित	सच बोलने वाला	सत्यवादी
प्रत्येक दिन होने वाला	दैनिक	जिसकी आदत-आचरण अच्छा हो	सदाचारी
सप्ताह में एक बार होने वाला	साप्ताहिक	सब कुछ जानने वाला	सर्वज्ञ
मास में एक बार होने वाला	मासिक	दूसरों पर उपकार करने वाला	परोपकारी
वर्ष में एक बार होने वाला	वार्षिक	जिसके मन में दया हो	दयालु
मन से संबंधित	मानसिक	जिसमें बल न हो	दुर्बल
शरीर से संबंधित	शारीरिक	छोटा भाई	अनुज
धर्म से संबंधित	धार्मिक	बड़ा भाई	अग्रज
राष्ट्र से संबंधित	राष्ट्रीय	जिसके माता-पिता न हों	अनाथ
जो ईश्वर में विश्वास रखता हो	आस्तिक	जो कभी न मरे	अमर
जो ईश्वर में विश्वास न रखता हो	नास्तिक	जो कभी बूढ़ा न हो	अजर
कम भोजन करने वाला	अल्पाहारी	जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
जो मांस खाता हो	मांसाहारी	जिसे किसी का भय (डर) न हो	निर्भय
जो शाक-सब्जी खाता हो	शाकाहारी	देखने वाला	दर्शक
मीठा बोलने वाला	मृदुभाषी	सुनने वाला	श्रोता
कम बोलने वाला	अल्पभाषी	बोलने वाला	वक्ता

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए-

(क) 'अजर' का अनेकार्थी शब्द है-

सूर्य

देवता

धन

शिव

(ख) 'घर' का अनेकार्थी शब्द है-

बादल

नया

मकान

जल

(ग) 'आज्ञा' का पर्यायवाची है-

आम्र

आदेश

वाणी

कलश

2. निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए, देखिए और समझिए कि ये शब्द कैसे बने-

आलस + ई - आलसी

सु - अच्छी - सु + गंध - सुगंध

परि + श्रम + ई - परिश्रमी

दुत् - बुरी - दुर् + गंध - दुर्गंध

बे + ईमान + ई - बेईमानी

सत् - अच्छी - सत् + जन - सज्जन

ईमान + दार - ईमानदार

दुर् - बुरा - दुर् + जन - दुर्जन

3. सही पर्याय से मिलान कीजिए-

सुर

भ्रमर

यामिनी

सरोवर

षट्पद

राक्षस

अनिल

अभिलाषा

स्वर्ण

अहि

अनल

वार

खेतिहर

देवता

तड़ाग

पावक

दैत्य

हेम

आकांक्षा

समीर

सर्प

हलधर

दिवस

निशा

4. चित्र देखकर उसका नाम लिखिए और फिर उसके दो भिन्न अर्थ लिखिए-









-

-

-

-

5. शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और अर्थ लिखिए-

ग्रह	-	_____	दिन	-	_____	पिता	-	_____
गृह	-	_____	दीन	-	_____	पीता	-	_____
कुल	-	_____	नीड़	-	_____	बेल	-	_____
कूल	-	_____	नीर	-	_____	बैल	-	_____

6. वाक्य पढ़कर सही शब्द चुनिए और भरिए-

- (क) धोबी की _____ धोबिन कपड़ों पर _____ कर रही थी। (स्त्री, इस्तरी)
- (ख) माँ ने दोनों बच्चों में एक _____ सारा _____ बाँट दिया। (सामान, समान)
- (ग) सुहावने मौसम को देखकर केशव का मित्र चिल्लाया, "केशव! _____ निकलो, देखो, _____ आई है।" (बाहर, बहार)
- (घ) _____ बोला, "आओ, मैं तुम्हें एक _____ की बात बताऊँ।" (राज/राजा)



13

शुद्ध वाक्य प्रयोग

(Use of Correct Sentences)

जाने-अनजाने हम अपनी भाषा में ऐसे शब्दों-वाक्यों का प्रयोग करते हैं जिनका उच्चारण, वर्तनी और प्रयोग गलत होता है।

आइए, कुछ ऐसे वाक्य पढ़ें, जिन्हें हम सही नहीं बोलते-

अशुद्ध

1. हमें आपसे पूछना था।
2. दादी जी, आप कहाँ गए थे?
3. मम्मी जी आ गए।
4. मेरे को यह नहीं चाहिए।
5. तुमको क्या खाना है?
6. पेड़ में मत चढ़ो।
7. माँ के पास अनेकों हार हैं।
8. वह तुम्हें क्या सिखा रहे थे?
9. ये मेरा बस्ता नहीं है।
10. मेरा बाल घना नहीं है।
11. पानी बरस रही है।
12. मेरे से चला नहीं जाता।
13. मेरा मित्र बड़ा खुश था।
14. पिछले रविवार को हम पिकनिक जाएँगे।
15. एक साठ पन्नों की कॉपी दे दीजिए।
16. मुझे एक फूलों की माला चाहिए।
17. बेफिजूल मत बोलें।
18. कृपया मुझे छुट्टी देने की कृपा करें।
19. शादी में मैंने बढ़िया कपड़े डाले।

शुद्ध

- मुझे आपसे पूछना है।
- दादी जी, आप कहाँ गई थीं?
- मम्मी जी आ गईं।
- मुझे यह नहीं चाहिए।
- तुम्हें क्या खाना है?
- पेड़ पर मत चढ़ो।
- माँ के पास अनेक हार हैं।
- वे तुम्हें क्या सिखा रहे थे?
- यह मेरा बस्ता नहीं है।
- मेरे बाल घने नहीं हैं।
- पानी बरस रहा है।
- मुझसे चला नहीं जाता।
- मेरा मित्र बहुत खुश था।
- आगामी रविवार को हम पिकनिक जाएँगे।
- साठ पन्नों वाली एक कॉपी दे दीजिए।
- मुझे फूलों की एक माला चाहिए।
- फिजूल मत बोलो।
- कृपया मुझे छुट्टी दें।
- शादी में मैंने बढ़िया कपड़े पहने।

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. नीचे लिखे वाक्यों में कुछ शब्द उलट-पलट गए हैं। उन्हें सही क्रम में लगाइए-

(क) तुम क्या मुझे मिठाई नहीं दोगी?

(ख) चाहते क्या हो मुझसे तुम?

(ग) अनेक बार समझा दिया है मैंने उसे।

(घ) कल-कल करके बहती थी एक नदी यहाँ।

(ङ) बहुत सुन लीं बातें आपकी हमने।

2. अपने आस-पास के लोगों की बात ध्यान से सुनिए। उन शब्दों या वाक्यों लिखिए जिन्हें वे गलत बोलते हैं-

3. निम्नलिखित शब्दों को पूरा कीजिए-

व्या....ण

प्रा....ना

....योग

कृ....या

प....क्षा

पु....क

पंक्ति....ँ

वि....य

उदाह....

स्वा....ष्ट

4. वाक्य शुद्ध करके लिखिए-

(क) बड़ी मुश्किल से आपका घर ढूँढा।

(ख) वहाँ नहीं बैठो।

(ग) कृपा करके भोजन खा लीजिए।

(घ) इन नियम का पालन करो।

(ङ) माँ, इनसे ही मुझे पुस्तक दी थी।

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) _____ कोई भी वाक्य पूरा नहीं होता।

(ख) जिन शब्दों से किसी काम _____ क्रिया कहते हैं।

(ग) स्त्रीलिंग कर्ता के साथ क्रिया भी _____ होती है।

(घ) पुल्लिंग कर्ता के साथ क्रिया भी _____ होती है।

(ङ) क्रिया के _____ काल होते हैं—

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

कल आपने कौन-कौन से कार्य किए? कोई दो लिखिए।

(क) मैंने कल (भूतकाल में) _____

(ख) आपकी कक्षा में बच्चे अभी क्या-क्या कर रहे हैं? कोई दो लिखिए।

(ग) आप और आपके दो मित्र बड़े होकर क्या बनेंगे? लिखिए—

मैं _____

मेरा पहला मित्र _____

मेरा दूसरा मित्र _____



1. **आँख का काजल होना** – अत्यंत प्रिय होना
 - मैं अपनी अध्यापिका की आँखों का काजल हूँ।
2. **आँख दिखाना** – नाराज होना
 - रोने पर माँ मुझे आँख दिखा देती हैं।
3. **आँखों-आँखों में समझाना** – चुपचाप अपनी बात समझा देना
 - मेरी प्यारी दादी माँ आँखों-आँखों में अपने मन की बात समझा देती हैं।
4. **आँखों में धूल झोंकना** – धोखा देना
 - माँ और दादी जी की आँखों में कोई धूल नहीं झोंक सकता।
5. **अंग-अंग ढीला होना** – थक जाना
 - इतना सारा काम करके मेरा अंग-अंग ढीला हो गया।
6. **अँगूठा दिखाना** – साफ मना कर देना
 - ज़रूरत पड़ने पर अँगूठा दिखाने वाला सच्चा मित्र नहीं होता।
7. **ईद का चाँद होना** – बहुत समय बाद मिलना
 - अरे माधव! तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।
8. **कान खड़े हो जाना** – चौकन्ना होना
 - चूहे की खटर-पटर सुनकर बिल्ली के कान खड़े हो गए।
9. **कान भरना** – चुगली करना
 - तुम सबके कान भरते हो, तुम मेरे मित्र नहीं हो सकते।
10. **कान खाना** – जिद करना
 - कान खाने वाले बच्चों को माँ सज़ा देती हैं।
11. **कौए उड़ाना** – बेकार का काम करना/समय बरबाद करना
 - सारे दिन टी. वी. देखना यानी कौए उड़ाना है।
12. **घी के दीये जलाना** – खुशी मनाना
 - हम नानी के घर गए, नानी ने घी के दीये जलाए।

- 
13. **घी-खिचड़ी होना** – मिल-जुलकर रहना
 - आओ, सब घी-खिचड़ी होकर रहें।
 14. **चार चाँद लगाना** – सुंदर बनाना/शोभा बढ़ाना
 - तुमने ऐसा गाया कि कार्यक्रम में चार चाँद लग गए।
 15. **चिकना घड़ा होना** – कोई असर न होना
 - माँ की बात सुनो, चिकने घड़े मत बनो।
 16. **छक्के छुड़ाना** – हरा देना
 - देख लेना, दौड़ में मैं सबके छक्के छुड़ा दूँगा।
 17. **दाल न गलना** – काम न होना
 - तुम झूठ बोलते हो, हमारे साथ तुम्हारी दाल नहीं गलने वाली।
 18. **दाँत दिखाना** – बेकार में हँसना
 - काम करते समय दाँत दिखाने का क्या मतलब है?
 19. **नमक-मिर्च लगना** – बात को बेवजह बढ़ा-चढ़ाकर कहना
 - नमक-मिर्च लगाकर नहीं, सीधी-सीधी बात बताओ।
 20. **पाँव फूँक-फूँककर रखना** – सावधानी से कार्य करना
 - दादा जी सो रहे हैं, हम कैरम ऐसे खेल रहे हैं, मानो पाँव फूँक-फूँककर रख रहे हों।
 21. **बिल्ली के गले में घंटी बाँधना** – स्वयं को संकट में डालना
 - माँ से बाहर खेलने जाने के बारे में पूछने का मतलब है, बिल्ली के गले में घंटी बाँधना।
 22. **बाल बाँका न होना** – कुछ भी नुकसान न होना
 - मिलकर रहने पर हमारा कोई भी बाल-बाँका नहीं कर सकता।
 23. **मुँह में पानी आना** – खाने का मन करना
 - गरम-गरम हलवा देखकर मुँह में पानी आ गया।
 24. **मुँह बनाना** – नाखुश होना
 - नाश्ता देखकर मुँह क्यों बना रहे हो?
 25. **भीगी बिल्ली बनना** – सहम जाना
 - पिता जी के घर में घुसते ही शोर मचाते बच्चे भीगी बिल्ली बन गए।

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

1. आपकी माँ आपको बहुत प्यार करती हैं। दिए गए मुहावरों को जोड़कर अपने और अपनी माँ के विषय में पाँच पंक्तियाँ लिखिए-

आँखें का काजल

आँखें दिखाना

आँखों-आँखों में समझाना

मुँह में पानी आना

घी के दीये जलाना

2. नीचे लिखा उदाहरण समझिए और वाक्य ठीक कीजिए-

(क) माँ अनेक बार मेरी जिद नहीं मानतीं, मैं तब नाराज हो जाती हूँ।

- माँ अनेक बार मेरी जिद नहीं मानतीं, मैं तब मुँह बना लेती हूँ।

(ख) तुम्हारे मीठे बोल तुम्हारे व्यवहार को बहुत ही सुंदर बना देते हैं।

(ग) लड़ाई वाली बात बेवजह बढ़ा-चढ़ाकर बताने से कोई फ़ायदा नहीं होगा।

(□) अरे चाचा जी! आप बहुत दिन बाद मिले।

(□) बेकार में मत हँसो, मन लगाकर काम करो।



पारस्परिक संदेश भेजने व हालचाल जानने के लिए प्रायः पत्र लिखे जाते हैं।

पत्र दो प्रकार के होते हैं-

(क) औपचारिक पत्र

(ख) अनौपचारिक पत्र

(क) औपचारिक पत्र-

इसके अंतर्गत प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र, किसी अधिकारी को पत्र, किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र आदि आते हैं।

(ख) अनौपचारिक पत्र-

इसके अंतर्गत व्यक्तिगत पत्र; जैसे- मित्र व संबंधियों आदि को पत्र, शुभकामना व बधाई-पत्र आदि आते हैं।

आगे दोनों ही प्रकार के कुछ पत्र दिए जा रहे हैं, इन्हें पढ़िए और पढ़कर स्वयं भी पत्र-लेखन सीखिए-

1. प्रधानाचार्य को शुल्क-क्षमा के लिए प्रार्थना-पत्र

सेवा में,

प्रधानाध्यापक जी

कैंब्रिज पब्लिक स्कूल

नई दिल्ली।

विषय : शुल्क-क्षमा के लिए प्रार्थना-पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में पाँचवीं कक्षा का छात्र हूँ। मेरे पिता जी गैस-स्टोव की एक दुकान में मिस्त्री हैं, उन्हें 3500/- रुपये मासिक वेतन मिलता है। इसी वेतन में उन्हें पूरे परिवार का भोजन, तीन बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था और मकान का किराया चुकाना पड़ता है। मैं पढ़ाई में अब तक हमेशा अव्वल रहा हूँ। मैं अपने पिता जी की मदद के लिए कभी-कभी दुकान पर भी चला जाता हूँ। मेरी दो छोटी बहनें भी पढ़ती हैं। अतः कृपया मेरा मासिक विद्यालय शुल्क क्षमा करने की कृपा करें।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
वैभव
कक्षा- 5 अ
दिनांक : _____

2. बड़े भाई के विवाह में शामिल होने हेतु चार दिन के अवकाश के लिए अपने प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र-

परीक्षा भवन

नई दिल्ली।

दिनांक : 12 मार्च, 20__

प्रधानाचार्य

एस. डी. पब्लिक स्कूल

पंजाबी बाग

नई दिल्ली

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मेरे बड़े भाई का शुभ विवाह दिनांक : 16 मार्च, 20__ को होना निश्चित हुआ है। विवाह के दिनों में घर में मेरी मौजूदगी होनी आवश्यक है। अतः मैं 14 मार्च, 20__ से 17, मार्च 20__ तक विद्यालय में उपस्थित नहीं हो सकूँगा। मुझे पिता जी के साथ काम में हाथ बँटाना होगा। आपसे विनती है कि मुझे इन चार दिनों का अवकाश प्रदान करें। मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
विकास
कक्षा- 5 (A)

3. दादी जी-दादा जी को अपनी पाठशाला के विषय में बताते हुए पत्र

15, सेकेंड फ्लोर

सरस्वती एनक्लेव

मथुरा

15 अगस्त, 20__

आदरणीय दादी जी-दादा जी
सादर चरण-स्पर्श।

हम सब यहाँ कुशलपूर्वक हैं, ईश्वर से आपकी कुशलता शुभ चाहते हैं। दादी जी, मेरी पाठशाला सबसे अच्छी पाठशाला है। यहाँ बच्चे खूब मन लगाकर पढ़ाई करते हैं, खेलों में खूब भाग लेते हैं। हमारी पाठशाला में अनुशासन का बहुत खूब ध्यान रखा जाता है। सभी बच्चे साफ-सुथरी वरदी पहनकर आते हैं। अध्यापिकाएँ खूब मन से पढ़ाती हैं और बच्चे मन लगाकर पाठ याद करते हैं। अधिकतर बच्चों की लिखाई मोती जैसी सुंदर है।

आसपास के शहरों से यहाँ बच्चे पढ़ने आते हैं। मैं अपनी पाठशाला में बहुत खुश हूँ।

पापा आपको चरण-स्पर्श लिखवाते हैं।

पत्र की प्रतीक्षा में

आपका पोता

अभिराज चौधरी

4. अपने मित्र को जल्दी स्वस्थ होने की प्रेरणा देते हुए पत्र

5/60 रेसकोर्स रोड

अमरावती

देहरादून

15 सितंबर, 20__

प्रिय भास्कर।

नमस्कार

मैं यहाँ स्वस्थ हूँ और तुम्हारे शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूँ। भास्कर! आशा है, तुम समय से दवाई ले रहे होगे। ताजे फल भी खा रहे होगे। मित्र! स्वास्थ्य से बढ़कर कोई मूल्यवान वस्तु इस संसार में नहीं है। माँ-पिता जी तुम्हें आशीर्वाद लिखवा रहे हैं। चाचा जी-चाची जी को मेरा प्रणाम कहना।

शुभकामनाओं सहित

तुम्हारा मित्र

आनंद कौशल

5. मित्र को जन्मदिन पर निमंत्रण-

235/B, गोविंदपुरी

नई दिल्ली

दिनांक : 01-10-20__

प्रिय मित्र यश,

दो माह से न तो तुम्हारा कोई पत्र आया और न ही कोई समाचार। तुम्हें याद होगा 25 अक्टूबर को मेरा जन्मदिन है।

अब तक तुम मेरे जन्मदिन पर हमेशा आते रहे। मुझे आशा है इस बार भी तुम इस अवसर पर जरूर उपस्थित होंगे। मैंने अपने मित्र साहिल, रवि, वैभव, शुभम आदि को भी बुलाया है। वे तुमसे मिलकर बहुत खुश होंगे। तुम आओगे तो कार्यक्रम का मज़ा ही कुछ और होगा। प्रातःकाल हवन होगा, दोपहर को प्रीतिभोज तथा रात्रि में नृत्य, चुटकले और मस्ती करेंगे। दिनभर खूब आनंद लेंगे। पूज्य चाचा जी, पूज्या चाची जी को सादर प्रणाम। गुणिका को प्यार।

तुम्हारी प्रतीक्षा में

तुम्हारा मित्र

अंशु त्यागी

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

पाठ में दिए गए पत्रों की ही भाँति विविध प्रकार के पत्र लिखने का अभ्यास कीजिए।



16

कहानी-लेखन (Story-Writing)

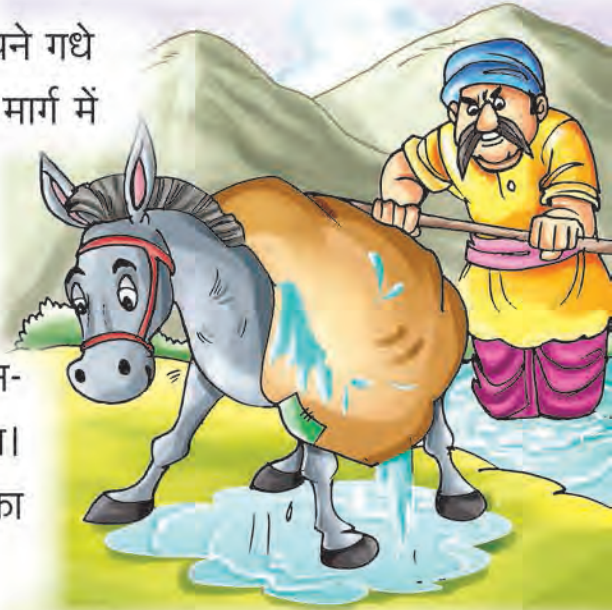
कहानी कहने, सुनने की परंपरा बहुत पुरानी है। कहानी का आनंद पढ़कर भी उठाया जा सकता है। कहानी-लेखन एक कला है। आगे कुछ कहानियाँ दी जा रही हैं, इन्हें पढ़कर स्वयं भी कहानी-लेखन का अभ्यास कीजिए—

1. नगर का व्यापारी और गधा

किसी गाँव में एक व्यक्ति नमक का व्यापार किया करता था। वह अपने गधे पर बहुत अधिक नमक लादकर इधर-उधर के गाँवों में ले जाता था। मार्ग में एक नाला पड़ता था। एक दिन एकाएक गधे का पाँव फिसल गया। वह नाले में जा गिरा। जब वह उठा तो उसे अनुभव हुआ कि भार बहुत हल्का हो गया है। उसे बहुत प्रसन्नता हुई।

कुछ दिन बाद वही गधा फिर उसी नाले में से गुजरा। इस बार वह जान-बूझकर गिर पड़ा। पहले की तरह फिर उसका भार थोड़ा कम हो गया। व्यापारी गधे की चालाकी समझ गया। उसने इसे सीधे मार्ग पर लाने का निश्चय कर लिया।

इसी उद्देश्य से व्यापारी ने एक बार उस पर रुई लाद दी। नाला आने पर गधे ने वही चाल चली। व्यापारी उसकी करतूत ध्यानपूर्वक देख रहा था। अब गधे को लेने के देने पड़ गए। रुई में जल भर जाने के कारण उसे उठाना भी दूभर हो गया। जैसे-तैसे करके उठा, भारी भार से पीठ झुक गई और टाँगें काँपने लगीं। दो पग भी चलना कठिन हो गया। उधर से व्यापारी ने कोड़े पर कोड़े लगाने शुरू किए। तब गधे के होश ठिकाने आ गए। इसके पश्चात् उसने धूर्तता कभी नहीं की।



शिक्षा— अधिक चालाक न बनो। (अथवा) धूर्तता बुरी नीति है।

2. कबूतर और मधुमक्खी

एक बार एक प्यासी मधुमक्खी पानी पीने के लिए नदी के तट पर गई। जब वह पानी पी रही थी, तब एकाएक वह पानी की प्रबल लहरों में बह गई।

तट के एक वृक्ष पर किसी कबूतर का घोंसला था। वह वहीं बैठा यह दृश्य देख रहा था। मधुमक्खी को



कष्ट में देखकर उसके दिल में दया आ गई। उसने चोंच से पत्ता तोड़ा और उड़कर मधुमक्खी के समीप फेंक दिया। जब मधुमक्खी उस पर बैठ गई, तब पत्ते को चोंच में पकड़कर कबूतर ने भूमि पर डाल दिया। मधुमक्खी के प्राण बच गए। उसने ईश्वर और कबूतर को धन्यवाद दिया।

कुछ दिन बाद एक शिकारी कंधे पर बंदूक रखे उसी वृक्ष के पास जा पहुँचा। उसने कबूतर को वृक्ष पर देखकर उसे लक्ष्य बनाना चाहा। संयोग से उसी मधुमक्खी ने यह दृश्य देख लिया। उसने इस तरह कबूतर को संकट में देखा तो तुरंत जाकर शिकारी को काट खाया। बंदूक चली, पर गोली लक्ष्य पर न लगी। इस

तरह कबूतर के प्राण बच गए और वह उड़ गया।

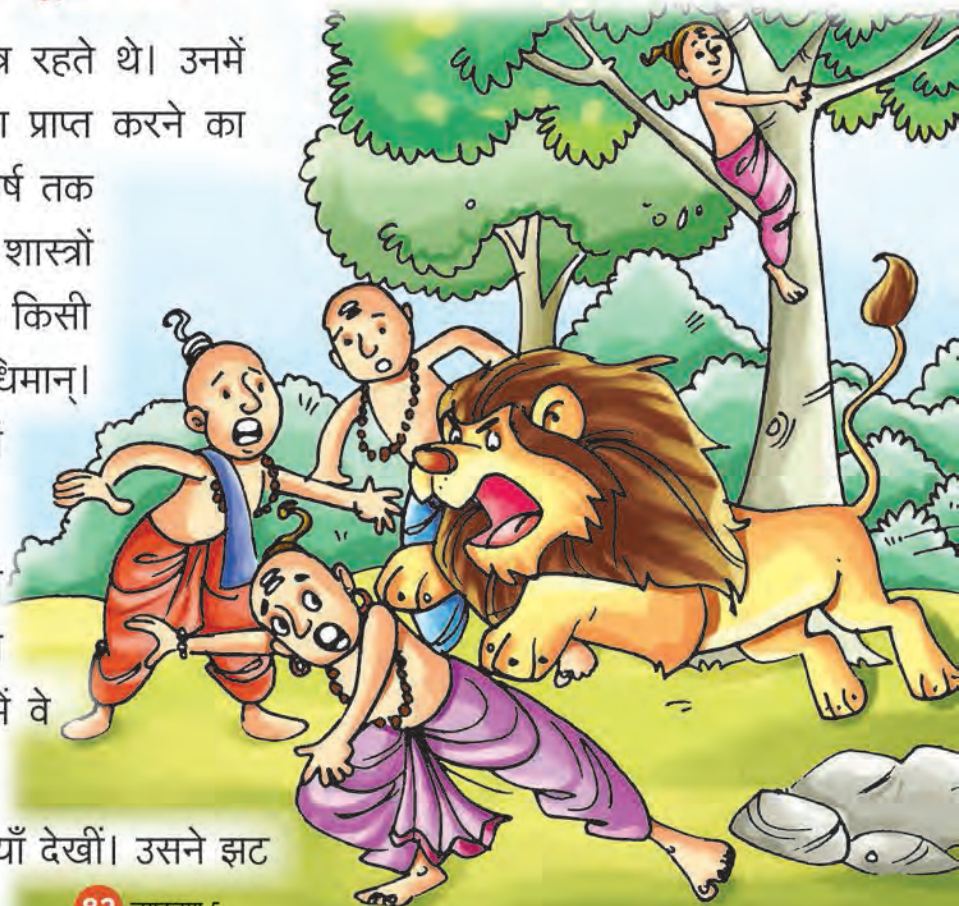
शिक्षा— जो तुम्हारा भला करे, तुम भी उसका भला करो। कर भला, हो भला।

3. मूर्ख पंडित

किसी समय एक नगर में चार ब्राह्मण-पुत्र रहते थे। उनमें घनिष्ठ मित्रता थी। एक बार उन्होंने विद्या प्राप्त करने का निश्चय किया। वे काशी गए। वहाँ बारह वर्ष तक विद्या प्राप्त करके घर लौटे। उनमें तीन तो शास्त्रों को पढ़कर बहुत विद्वान् हो गए, परंतु चौथा किसी कारणवश पढ़ न सका, किंतु था वह बुद्धिमान्। तीन मित्र विद्वान् तो बन गए, किंतु उनमें सामान्य बुद्धि की कमी थी।

एक बार उन्होंने विचार किया कि हमें अपनी विद्या के बल पर धन कमाना चाहिए। इस उद्देश्य से वे परदेश को चल पड़े। रास्ते में वे भयानक जंगल से गुजरे।

जंगल में एक मित्र ने बिखरी हुई कुछ हड्डियाँ देखीं। उसने झट



से अपने मित्रों से कहा, “अरे मित्रो! मुझे हड्डियाँ जोड़ने की विद्या आती है। इस पर विद्या का प्रयोग करूँ?” दूसरे मित्र ने प्रसन्न होकर कहा, “हाँ, हाँ, मैं इसमें मांस और रक्त डालूँगा।” तीसरा बोला, “मैं इसमें प्राण डालूँगा।” चौथा बुद्धिमान किंतु विद्या से शून्य मित्र बोला, “अरे, अरे! रुक जाओ। ये हड्डियाँ शेर की हैं। इसमें प्राण डालोगे, तो यह शेर बन जाएगा और हम सबको खा जाएगा।” तीसरा मित्र खीझ उठा। वह कहने लगा, “हमने इतनी विद्या पढ़ी है, क्या वह बेकार जाएगी? हमें अपनी विद्या का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।”

तब चौथे बुद्धिमान मित्र ने कहा, “अच्छा भैया, मुझे उस वृक्ष पर चढ़ लेने दो, फिर जैसा चाहो वैसा करना।” वह वृक्ष पर चढ़ गया। सबने अपनी-अपनी विद्या का प्रयोग किया। एक ने ढाँचा बनाया। दूसरे ने रक्त-मांस डाला और तीसरे ने प्राण। अब तो शेर जीवित हो गया। उसने तीनों को खा लिया। शेर के चले जाने पर बुद्धिमान् ब्राह्मण-पुत्र वृक्ष से उतरकर घर को चला गया।

शिक्षा- संसार में बुद्धि बड़ी है, विद्या नहीं। बुद्धिरहित बड़े-बड़े विद्वान् भी दुःख भोगते हैं।

4. ईमानदार बालक

किसी स्कूल में बहुत-से विद्यार्थी पढ़ते थे। एक दिन मास्टर जी ने बच्चों को कुछ प्रश्न घर से हल करने के लिए दिए। एक विद्यार्थी ने किसी मित्र की सहायता लेकर प्रश्न कर लिए। स्कूल में अध्यापक महोदय ने कॉपी देखी तो बहुत प्रसन्न हुए।

अध्यापक महोदय प्रसन्न होकर कुछ पुरस्कार देने लगे। उस बालक ने अपनी बारी आने पर पुरस्कार लिया नहीं, उल्टा रोने लगा। यह देखकर अध्यापक महोदय बड़े चकित हुए। उन्होंने उस बालक से रोने का कारण पूछा। बालक ने बड़ी नम्रतापूर्वक उत्तर दिया, “गुरु जी, आप समझ रहे हैं कि ये सब प्रश्न मैंने अपनी बुद्धि से हल किए हैं परंतु यह सत्य नहीं। इनमें से एक प्रश्न मैंने मित्र की सहायता से हल

किया है। अब आप स्वयं निर्णय करें कि मैं पुरस्कार पाने के योग्य हूँ या दंड के योग्य।”

यह सुनकर अध्यापक महोदय बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने पुरस्कार देते हुए कहा, “बेटे! यह पुरस्कार मैं तुम्हें तुम्हारी सच्चाई और ईमानदारी के लिए देता हूँ।” शिष्य का हृदय गद्गद हो गया।

बच्चो! जानते हो यह बालक कौन था? यह बालक गोपालकृष्ण गोखले थे।

शिक्षा- सच्चे और ईमानदार बनो। सच्चाई व्यक्ति को कुंदन (सोना) बना देती है।





17

निबंध-लेखन (Essay-Writing)

1. देश का लाल-लालबहादुर शास्त्री

लालबहादुर शास्त्री हमारे देश के महानतम नेताओं में गिने जाते हैं। वे हमारे देश के दूसरे प्रधानमंत्री थे।

लालबहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर, 1904 को हुआ था। उनका परिवार बहुत साधारण था। उनके पिता का नाम शारदा प्रसाद श्रीवास्तव और माता का नाम रामदुलारी देवी था। शारदा प्रसाद श्रीवास्तव शिक्षक थे। उनके पास धन-दौलत नहीं थी, पर समाज में मान-सम्मान था।



जब लालबहादुर की उम्र डेढ़-दो वर्ष रही होगी, तभी उनके पिता का देहांत हो गया। इससे पूरे परिवार पर मानो बिजली ही गिर पड़ी। फिर भी उनकी माता ने बड़ी हिम्मत से काम लिया और होनहार पुत्र का मुँह देखकर कष्ट सहन करती रहीं।

प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद लालबहादुर ने वाराणसी के हरिश्चंद्र कॉलेज में प्रवेश ले लिया। जब वे हाई स्कूल में पढ़ रहे थे, तभी उन्हें महात्मा गांधी का भाषण सुनने का अवसर मिला। गांधी जी की बातों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। गांधी जी का सादा जीवन और देश-प्रेम देखकर वे मुग्ध हो गए। उनके मन में भी देश-सेवा की लग्न पैदा हो गई।

जब गांधी जी ने अंग्रेजों के विरुद्ध असहयोग आंदोलन शुरू किया तो स्कूल और कॉलेजों के छात्र पढ़ाई-लिखाई छोड़कर उनके पीछे चल पड़े। बहुत-से लोगों ने सरकारी नौकरियाँ छोड़ दीं। लालबहादुर भी पढ़ाई छोड़कर आंदोलन में कूद पड़े।

जब आंदोलन समाप्त हुआ तो लालबहादुर ने काशी विद्यापीठ में प्रवेश ले लिया। वहाँ से उन्होंने 'शास्त्री' की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद वे लालबहादुर शास्त्री कहलाने लगे।

शास्त्री जी का विवाह ललिता देवी के साथ हुआ। अपने विवाह में उन्होंने केवल दो चीजें स्वीकार की थीं—एक चरखा, दूसरा एक थान खादी का कपड़ा।

आगे चलकर उनका पूरा समय देश-सेवा में बीतने लगा। आजादी के आंदोलन में वे कई बार जेल गए। जब देश आजाद हुआ तो अपनी सरकार बनी। लालबहादुर शास्त्री ने देश में अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। जब वे केंद्र में रेलमंत्री थे तो एक रेल-दुर्घटना हो गई, जिसमें अनेक लोगों की जान चली गई। इस बात से शास्त्री जी को बड़ा धक्का लगा। उन्होंने अपने आपको ज़िम्मेदार मानते हुए अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

जवाहरलाल नेहरू के बाद वे भारत के प्रधानमंत्री बने। उस समय हमारा देश अनाज के संकट से जूझ रहा था। शास्त्री जी ने बड़ी सूझ-बूझ से इस संकट का सामना किया और देश के स्वाभिमान की रक्षा की। उसी समय पाकिस्तान ने हमारे देश पर आक्रमण कर दिया। भारत ने इस आक्रमण का करारा जवाब दिया। बाद में रूस की कोशिशों से भारत और पाकिस्तान के बीच ताशकंद में समझौता हुआ। वहीं उसी रात को हृदयगति रुक जाने के कारण उनका निधन हो गया।

आज शास्त्री जी हमारे बीच नहीं हैं, पर उनकी कीर्ति अमर है। उन्होंने नारा दिया था—“जय जवान, जय किसान।” यह नारा भी अमर है।

2. वन-महोत्सव

वन-महोत्सव हर वर्ष बरसात के मौसम में मनाया जाता है। यह एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है जो वृक्षारोपण के कार्य में सबकी मदद लेने के लिए प्रतिवर्ष मनाया जाता है।

वास्तव में वन हमारे लिए बहुत लाभदायक हैं। वनों से हमें फल-फूल, इमारती लकड़ी, ईंधन, जड़ी-बूटियाँ आदि मिलते हैं। छोटी-सी दियासलाई से लेकर बड़े-बड़े सामान लकड़ी से बनते हैं। मकानों के दरवाजे-खिड़कियाँ, मेज, कुर्सी, सोफे, दीवान, पलंग आदि बनाने में लकड़ी का ही उपयोग किया जाता है।

वृक्ष हमें शीतल छाया देते हैं, जो तपती गरमी में हमें बड़ा सुख पहुँचाती है। वृक्षों की पत्तियाँ पशुओं के चारे और खाद के काम आती हैं। वनों की गोद में न जाने कितने पशु-पक्षी पलते हैं जो हमारी पृथ्वी की शोभा हैं।

वन भूमि के कटाव को रोकते हैं। वृक्षों की जड़ें मिट्टी को बाँधे रखती हैं। इससे पानी का बहाव तेज होने पर भी तूफान के वेग को कम कर देते हैं।

वन वर्षा कराने में भी सहायक होते हैं। अनुभव से हम देखते हैं कि जहाँ घने वन होते हैं, वहाँ अधिक वर्षा होती है। पहाड़ों की तलहटी में मैदानों की अपेक्षा इसीलिए वर्षा अधिक हुआ करती है।

आज दिन-प्रतिदिन प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इस कारण वायु दूषित होती जा रही है। वृक्ष वायु को शुद्ध करते हैं और वातावरण को विषैली गैसों से मुक्त करते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वन हमारे लिए बहुत उपयोगी ही नहीं, बल्कि हमारे जीवन का आधार हैं। लेकिन हमारे लिए यह चिंता की बात है कि हमारे देश में बहुत बड़े क्षेत्र में वन थे पर आबादी बढ़ने के कारण वनों का क्षेत्र घटता जा रहा है। लोग वनों को काटकर बस्तियाँ बसाते जा रहे हैं। इससे हर वर्ष जंगल-के-जंगल साफ हो रहे हैं। अब इस बात का डर सताने लगा है कि एक दिन कहीं सारे वन ही समाप्त न हो जाएँ।

इस स्थिति को रोकने के लिए पेड़ों की कटाई पर रोक लगाई गई है। यही नहीं, खाली पड़ी भूमि पर



नए-नए वृक्ष लगाए जा रहे हैं। बरसात के मौसम में हजारों पेड़ लगाए जाते हैं। पौधे लगाने से पहले गड्ढे तैयार कर लिए जाते हैं। वर्षा होने पर इन गड्ढों में मिट्टी, खाद और कीड़े मारने वाली दवा भर दी जाती है। फिर इनमें पौधे लगाए जाते हैं। पौधे लगाने के बाद इनकी देखभाल भी जरूरी होती है। पौधों की सुरक्षा के लिए गड्ढे के चारों ओर बाड़ लगाई जाती है। समय-समय पर पौधों की निराई-गुड़ाई भी की जाती है।

एक पुरानी कहावत है कि वृक्ष से जल है और जल से जीवन है। अपने जीवन की रक्षा के लिए हमें उत्साह के साथ वन-महोत्सव कार्यक्रम में भाग लेना चाहिए और जहाँ भी संभव हो, पेड़ लगाने चाहिए। किसी भी देश की एक-तिहाई भूमि पर वन होने चाहिए। हमारे देश में ऐसा नहीं है। आइए, हम इस क्षति की पूर्ति के लिए प्रयत्न करें और वन-महोत्सव को भी अन्य त्योहारों की तरह उत्साहपूर्वक मनाएँ।

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

निबंध लिखिए—

बचत के महत्त्व

स्वतंत्रता दिवस



18

अनुच्छेद-लेखन (Paragraph-Writing)

किसी एक भाव अथवा विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गए संवाद और लघु वाक्य-समूह को अनुच्छेद-लेखन कहते हैं। इसका मुख्य कार्य किसी एक विचार को इस तरह लिखना होता है, जिसके सभी वाक्य एक-दूसरे से बँधे होते हैं। एक भी वाक्य निरर्थक एवं अनावश्यक नहीं होना चाहिए। इसकी भाषा सरल होनी चाहिए एवं मूल बिंदुओं की ही चर्चा होनी चाहिए। विद्यार्थियों के अभ्यास हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण और समसामायिक विषयों पर अनुच्छेद आगे दिए गए हैं-

1. भारत की विशेषता : अनेकता में एकता

भारत प्राकृतिक सौंदर्य एवं संस्कृति की महानता में विश्वभर में बेजोड़ है। भारत विविधताओं का देश है। यहाँ अनेक जातियों, धर्मों तथा संप्रदायों ने जन्म लिया है। जो लोग बाहर से आए वे भी यहीं के होकर रह गए। आज इस विशाल देश में विभिन्न संस्कृतियों तथा धर्मों का संगम है। इन सभी विभिन्नताओं में भी एक भीतरी एकता छुपी हुई है। यद्यपि समय-समय पर अनेक नेतागण सांप्रदायिक दंगों की आग भड़काते रहते हैं परंतु फिर भी भारत की राष्ट्रीय एकता बरकरार है। कहीं संकट आता है तो सारा देश एक हो जाता है। भारत की अनेकता में एकता को बनाए रखना ही सच्ची देशभक्ति है।

2. पुस्तक मेला

मेलों का उद्देश्य मनोरंजन होता है। गाँवों में मेले त्योहारों से संबंधित होते हैं। नगरों में मेले का स्वरूप बदलता जा रहा है। कला-मेला, वस्त्र-मेला, शिल्प-मेला, वसंत-मेला, सेब-मेला, व्यापार-मेला आदि विभिन्न तरह के मेलों का आयोजन होने लगा है। इसी क्रम में पुस्तक-मेलों का भी आयोजन होने लगा है। इसमें प्रकाशक अपने-अपने प्रकाशनों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों को विभिन्न स्टॉलों में प्रदर्शित करते हैं। दर्शक इन पुस्तकों को देखकर अपनी पसंद की पुस्तकें खरीद लेते हैं। पुस्तक-मेले विद्यालय स्तर से लेकर जिला, प्रांत, देश और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होते हैं। नई दिल्ली में देश का सबसे बड़ा 'अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला' लगता है। यह प्रगति मैदान में आयोजित होता है। इसमें देश-विदेश के प्रकाशक अपनी-अपनी पुस्तकें प्रदर्शित करते हैं। पुस्तक-मेलों से पुस्तक-संस्कृति का प्रचार-प्रसार होता है।

3. घड़ी का संदेश

घड़ी का टिक-टिक करता स्वर समय के शनैः शनैः बीतने की सूचना देता रहता है। घड़ी अनुशासन में बँधी अपने कर्तव्य का पालन करने में निमग्न रहती है। वह मनुष्य को निरंतर कर्मशील रहने की प्रेरणा देता है। वह संदेश देती है कि समय के महत्त्व को समझो, समय का सुदयोग करो। समय किसी के लिए नहीं रुकता और अविरल प्रवाहित हो रही जलधारा के समान निरंतर आगे और आगे बढ़ता चला जाता है। उसके समक्ष किसी का वश नहीं चलता। जो समय का सदुपयोग कर लेते हैं, उन्हीं का जीवन सार्थक होता है। घड़ी का टिक-टिक करता स्वर निरंतर कर्तव्यों की ओर मुड़ने का संदेश देता है। घड़ी के पास लाभ-हानि का हिसाब रखने का समय नहीं होता। यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह घड़ी से क्या सीखता है?

4. रक्षाबंधन

रक्षाबंधन भाई-बहन के प्रेम का पवित्र त्योहार है। यद्यपि यह त्योहार प्रमुख रूप से हिंदुओं का है परंतु अन्य धर्मों के लोग भी इसे उत्साह, उमंग और उल्लास से मनाते हैं। यह श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाई की आरती उतारती हैं। उसकी कलाई पर धागे से बनी राखी बाँधती हैं और उसकी लंबी आयु की कामना करती हैं। भाई भी जीवनभर अपनी बहन की रक्षा का वचन देता है और उसे उपहार आदि देता है। रक्षाबंधन का त्योहार सभी धर्मों के लोग मिलकर मनाते हैं। चित्तौड़ की महारानी कर्मवती ने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेजी थी। रक्षाबंधन का यह पवित्र त्योहार भारत की एकता का प्रतीक है।

अभ्यास



विषयनिष्ठ प्रश्न

निम्नलिखित विषयों पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए-

1. मेरा विद्यालय
2. समाचार-पत्र
3. पुस्तकालय
4. अनुशासन
5. आत्मनिर्भरता
6. विद्यालय में मेरा पहला दिन
7. जब मैं कक्षा का मॉनिटर बना
8. जब मैंने पहली बार फूल तोड़ा



19

संवाद-लेखन (Dialogue-Writing)

बातचीत को ही संवाद कहते हैं।

संवाद का अर्थ है-बातचीत। बातचीत किसी भी विषय पर हो सकती है। बातचीत तो सभी लोग कर लेते हैं, किंतु अच्छी बातचीत वही है जो उम्र, पद, ध्यान तथा संबंध के अनुसार हो। लेखन में भी संवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कहानियाँ हों या नाटक, उनमें भी पात्रों के बीच संवाद होता है।

आइए देखें कुछ संवाद के उदाहरण-

1. एक दुकानदार तथा स्त्री का संवाद

- स्त्री : भाई साहब। उस खिलौना गाड़ी का कितना मूल्य है?
खिलौनेवाला : पचास रुपये।
स्त्री : यह तो बहुत महँगी है। अच्छा, उस गुड़िया की कीमत बताओ।
खिलौनेवाला : वह तो और भी महँगी है। उसकी कीमत एक सौ पचास रुपये है।
स्त्री : नहीं-नहीं, इतना महँगा खिलौना मुझे नहीं चाहिए।
खिलौनेवाला : ठीक है, आप यह चाबी वाला घोड़ा ले लो। यह केवल बीस रुपये का है।
स्त्री : ठीक है, यही दे दो।

2. पिता और पुत्र का संवाद

- पिता : रोहन, कहाँ जा रहे हो?
रोहन : खेलने जा रहा हूँ, पिता जी।
पिता : क्या तुमने विद्यालय से मिला गृहकार्य पूरा कर लिया।
रोहन : नहीं, अभी नहीं किया।
पिता : नहीं बेटा, पहले पढ़ लो फिर खेलने जाना।
रोहन : अच्छा पिता जी, मैं पहले पढ़ लेता हूँ, फिर खेलने जाऊँगा।
पिता : शाबाश बेटा!



विषयनिष्ठ प्रश्न

संवाद लिखिए □

- क सड़क पर चलते हुए पिता-पुत्र के बीच संवाद (सड़क के नियम समझाते हुए)।
 क दो यात्रियों के बीच संवाद (रेलयात्रा के समय ध्यान देने योग्य सावधानियाँ)।



20

अपठित गद्यांश (Unseen Passage)

अपठित का अर्थ है- जो पहले कभी न पढ़ा हो। अपठित गद्यांश में से पूछे गए प्रश्न बच्चे की बुद्धि की यह परीक्षा करते हैं कि उसने अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ा या नहीं। उसे समझा या नहीं। अपठित गद्यांश में पूछे गए प्रश्न बच्चे की समझ को बढ़ाते हैं।

नीचे दिए गए अपठित गद्यांश पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1.

हर रोज़ सूरज समय पर निकलता है और इस धरती के प्राणियों को शक्ति देकर अस्त हो जाता है। फिर चंद्रमा आता है और वह भी अपनी चाँदनी से धरती को नहलाकर चला जाता है। उसी प्रकार मौसम क्रम से आते हैं और चले जाते हैं। कैसा अनुशासन है यह! बिना बोले, बिना शोर मचाए तन्मयता से काम करते हैं ये। और मानव! वह तो अनुशासन पसंद ही नहीं करता जबकि समाज अनुशासित व्यक्तियों से ही चलता है। अनुशासित विद्यार्थी ही स्वयं के लिए समय निकाल पाता है, सफलता प्राप्त करता है क्योंकि वह समय का भी आदर करता है।

• सही उत्तर को चुनकर लिखिए-

1. 'सूरज सभी प्राणियों को शक्ति देता है' शक्ति एक-
(क) वस्तु है (ख) ताकत या ऊर्जा है
(ग) औषधि है (घ) सोना है
2. सूरज, चाँद, मौसम तन्मयता से काम करते हैं क्योंकि-
(क) उन्हें ऐसा करने का ईश्वर ने आदेश दिया है।
(ख) वे खेल-खेल में ऐसा करते हैं।
(ग) हर एक को बस उतना ही समय मिला है।
(घ) उन्होंने कर्म को ही जीवन का लक्ष्य मान लिया है।
3. मानव को अनुशासन पसंद नहीं क्योंकि-
(क) वह बंधन में नहीं रहना चाहता। (ख) उसे अनुशासन का अर्थ नहीं पता।
(ग) वह थक गया है। (घ) उसे अनुशासनहीनता पसंद है।

2.

मित्र वही जो मित्र के काम आए। मित्रता वास्तव में एक अमूल्य धन है। सुख-दुःख में साथ रहने वाला, समान रूप से व्यवहार करने वाला ही सच्चा मित्र है। मित्र बनाने से पूर्व उसकी बारीक जाँच-परख आवश्यक है। स्वार्थी तथा मौके का फायदा उठाने वालों को मित्र नहीं कहा जा सकता।

• सही उत्तर को चुनकर लिखिए-

1. मित्र वही जो मित्र के काम आए अर्थात्-
(क) उसका गृहकार्य कर दे (ख) उसके लिए स्वादिष्ट व्यंजन लाए
(ग) घर तक छोड़ने आए (घ) अच्छे-बुरे समय में साथ दे
2. अमूल्य धन का अर्थ है-
(क) जिसका कोई मूल्य न हो (ख) मूल्यवान
(ग) बहुत कम मूल्य हो (घ) जिसका मूल्य दिया न जा सके
3. मित्र की बारीक जाँच-परख आवश्यक है क्योंकि-
(क) वह सब भेद जान जाता है (ख) वह रोगी तो नहीं है
(ग) वह ही हमारा सहारा होता है (घ) वह गुप्तचर तो नहीं है
4. 'मित्र' शब्द के दो पर्याय होंगे-
(क) मीत, दुष्ट (ख) सखा, सद्भाव
(ग) मितव्ययी, सखा (घ) सखा, सहचर

3.

हमारा देश भारत अति पुरातन देश है। इसका प्राचीन नाम आर्यावर्त है। इस देश के पूर्व-निवासी आर्य कहलाते थे। यहाँ एक प्रतापी राजा दुष्यंत हुए थे। उनका विवाह कण्व ऋषि की पालिता पुत्री शकुंतला के साथ हुआ। शकुंतला ने सिंह के समान शक्तिशाली पुत्र भरत को जन्म दिया। उसी युवराज के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

• प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. दुष्यंत को 'प्रतापी' क्यों कहा गया है?

2. इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

3. गद्यांश में से दो व्यक्तिवाचक संज्ञा और दो विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए-

संज्ञा _____

विशेषण _____

4.

बहुत समय पहले ही मनुष्य ने पेड़-पौधों के महत्त्व को जान लिया था। उसने समझ लिया था कि पेड़-पौधे केवल नेत्रों को सुख प्रदान करने के लिए ही नहीं, वरन् प्राणि-जगत के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने वृक्षों की पूजा का विधान बनाया। वृक्ष प्रदूषण को कम करते हैं, वायुमंडल को शुद्ध बनाते हैं। आओ, हम सब मिलकर एक-एक वृक्ष लगाएँ।

• प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. मनुष्य ने बहुत समय पूर्व किसका महत्त्व जाना?

2. वृक्ष क्या कार्य करते हैं?

3. 'ता' प्रत्यय जोड़कर शब्द पुनः लिखिए-

शुद्ध + ता _____

आवश्यक + ता _____

5.

एक था माहिर। माहिर के घर में आटा खत्म हो गया तो माँ ने कहा, "माहिर, गेहूँ पिसवा लाओ।" माहिर को लगा जैसे उसकी शान में बट्टा लग गया हो। उसने कहा, "मैं नहीं जाऊँगा गेहूँ पिसवाने। मेरा कोई दोस्त यह काम नहीं करता। कोई दोस्त देख लेगा तो....।" खैर, माँ के डाँटने पर माहिर गेहूँ पिसवाने चला गया। वहाँ उसने देखा उसका मित्र संजय अपने पिता की दुकान के फर्श की सफाई कर रहा था। उसे आश्चर्य हुआ। माहिर ने पूछा, "क्यों संजय! तुम्हारा सेवक कहाँ है? तुम यह काम क्यों कर रहे हो?" संजय बोला, "वह आज बीमार है और पिता जी काम से कहीं गए हुए हैं। अपना काम करने में शर्म कैसी?" और माहिर की आँखें खुल गईं। गेहूँ पिसवाकर वह शान से आटे का डिब्बा उठाए चला आ रहा था।

• सही उत्तर को चुनकर लिखिए-

1. माहिर गेहूँ पिसवाने कहाँ गया?

(क) आटाघर में

(ख) चक्की पर

(ग) बाजार में

(घ) मशीनघर में

2. माहिर के दोस्त उसे गेहूँ पिसवाते देखते तो क्या करते?

(क) हँसते

(ख) बुराई करते

(ग) मारते

(घ) उसे दोस्त नहीं बनाते

3. संजय पिता की दुकान की कर रहा था-

(क) चिनाई

(ख) पुताई

(ग) मरम्मत

(घ) सफाई



21

डायरी-लेखन (Diary-Writing)

डायरी में मन के भावों को अभिव्यक्त करना स्वयं को आइने में देखना है।

हमारे जीवन में प्रतिदिन कोई-न-कोई घटना घटित होती रहती है। हमारे घर में या विद्यालय में प्रतिदिन कुछ-न-कुछ नया अवश्य होता है। प्रतिदिन होनी वाली इन घटनाओं को लिखना बहुत सरल है। कभी रिश्तेदार हमारे घर आता है, उसके साथ बिताए क्षणों को हम लिख सकते हैं। हमने कोई पुस्तक पढ़ी, उसके विषय में भी डायरी में लिखा जा सकता है। मन में उठने वाले विचारों को भी हम डायरी में लिख सकते हैं।

डायरी लिखना बहुत अच्छी आदत है, जिसके द्वारा हम अपने जीवन के प्रत्येक दिन को, सदा के लिए, शब्दों द्वारा जीवित रख सकते हैं।

नीचे दसवर्षीय बालक आनंद की डायरी के कुछ पृष्ठ दिए जा रहे हैं, इन्हें पढ़िए-



22 अप्रैल, 20__

आज कक्षा-अध्यापिका ने मुझे कक्षा-मॉनीटर नियुक्त किया। सभी कक्षाओं के मॉनीटर प्रधानाचार्य से मिलने गए थे। हमारे प्रधानाचार्य डी० जे० गुप्ता ने मेरी कमीज पर मॉनीटर का बैच लगाया तो मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उन्होंने मेरी पीठ थपथपाकर कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के लिए कहा। मैं उन्हें कभी निराश नहीं करूँगा।

कविता नौ वर्ष की बालिका है, उसकी डायरी के कुछ पृष्ठ पढ़िए-

12 अप्रैल, 20__

कल से मन उदास है। मेरा परीक्षा परिणाम अच्छा नहीं आया। हिंदी और इतिहास में मेरे अंक अच्छे नहीं आए। ऐसा मेरी लापरवाही के कारण हुआ है। मैंने हिंदी के अध्यापक श्री सुमित शर्मा की बातों की ओर ध्यान नहीं दिया। मैं आज से प्रतिदिन श्रुतलेख लिखूँगी। इससे मेरी मात्राओं की अशुद्धियाँ दूर हो जाएँगी। इतिहास तो मैं ऋचा दीदी से पढ़ लूँगी। वे हमारे साथ वाले फ्लैट में रहती हैं। वे तो बार-बार कहती रहती थीं। मैं ही पढ़ने नहीं जाती थी।





विषयनिष्ठ प्रश्न

- ये आपकी डायरी के पृष्ठ हैं। निम्नलिखित विषयों पर अपने विचार इनमें लिखने का प्रयास कीजिए—
(क) आपका जन्मदिन है, पिता जी ट्रैफिक-जाम के कारण देर से लौटे। माँ ने धैर्यपूर्वक आपका जन्मदिन मनवाया। खुश होने के साथ-साथ आप परेशान भी थे। आपका यह अनुभव कैसा रहा लिखें।

A large yellow rectangular area with horizontal lines for writing, intended for the student's response to the first question.

- (क) अगले दिन आपकी अंग्रेजी की परीक्षा थी। अचानक आपकी दादी बीमार हो गई। आपको उनके साथ अस्पताल जाना पड़ा। अगले दिन आपकी परीक्षा में क्या स्थिति रही? लिखिए—

A large light blue rectangular area with horizontal lines for writing, intended for the student's response to the second question.



22

चित्र-वर्णन

(Picture-Description)

चित्रों को देखकर उनके विषय में कुछ वर्णित करना चित्र-वर्णन है।

चित्र देखकर उसमें वर्णित सूक्ष्म-से-सूक्ष्म अंशों का अवलोकन कर अपनी भाषा में उसे अभिव्यक्त करने की कला ही चित्र-वर्णन है।

चित्र वर्णन से भाषा की अभिव्यक्ति सुसंगठित, भाषा-प्रयोग और कल्पना-शक्ति का विकास होता है।

- दिए गए चित्रों को देखो ओर उसके बारे में लिखो-

(क) यह आम के बाग का चित्र है।



(ख) दिए गए शब्दों की सहायता से इस चित्र का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए-

- बाजार का दृश्य
- खरीददार
- विभिन्न विक्रेता
- मोलभाव करते हुए
- कूड़ेदान का दुरुपयोग





23

विज्ञापन-लेखन (Advertisement-Writing)

किसी वस्तु का बाजार में प्रचार करना विज्ञापन कहलाता है।

यदि बाजार में कोई नई वस्तु आई है तो उसके विषय में विशेष रूप से प्रचार करना आवश्यक हो जाता है।

आज का युग विज्ञापन का युग है। छोटी पत्रिकाओं से लेकर प्रतिदिन के समाचार-पत्र, रेडियो, दूरदर्शन तक में हर क्षण अनेक प्रकार की वस्तुओं के विज्ञापन दिखाई देते हैं।

विज्ञापन लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें-

- इन्हें वर्तमान काल में लिखा जाना चाहिए।
- इनमें रचनात्मक भाषा का प्रयोग करें।
- विज्ञापन चित्रात्मक और आकर्षक हो।
- विषय-वस्तु के अनुकूल भरपूर जानकारी दें।

इन विज्ञापनों को देखिए-

THE SAMPLE SALE
REPAIRS/SHIRTS/GUYS

MICHAEL KORS, SUPER DRY, JERARD, COACH, JUCY COUTURE, DOM REBEL, NUDE, TRUE RELIGION, GSTAR, SCOTCH & SODA, PAK + BONE, JUNDERBFG, DIESEL, CITIZENS OF HUMANITY, SEVEN FOR ALL MANKIND, HUDSON, JEANS, AG AND MORE.

DAYS INN
CALGARY SOUTH
3828 MACLEOD TRAIL SOUTH EAST
CALGARY

587 887 2377 . THE SAMPLE SALE GUYS.COM

FALL DESIGNER CLOTHING
SALE
SEPT 20 - SEPT 23
FIRST TIME EVER IN CALGARY

4 DAY SALE OPEN TO PUBLIC
THURSDAY SEPT 20 11AM - MIDNIGHT
FRIDAY SEPT 21 11AM - MIDNIGHT
SATURDAY SEPT 22 11AM - 10PM
SUNDAY SEPT 23 11AM-8PM

WOMENS & MENS COLLECTION
FULL SIZE RANGE
DENIM, JACKETS, DRESSES
SHIRTS, HAND BAGS & MORE

40%-80% OFF

10% OFF WITH THIS AD

श्री
एक दाम की दुकान

श्री हरि साड़ीज
सूटिंग एण्ड शर्टिंग

एक बार लेवा का मतका दे!

स्थान : अवस्थी स्वीट्स एण्ड रेस्टोरेन्ट के नीचे कोतवाली के सामने, उन्नाव Mob.: 7309472000, 9839775017

अब आप बनाइए इन चीजों की बिक्री के लिए कुछ आकर्षक विज्ञापन-

आइसक्रीम

हाजमे की गोलियाँ

